कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- परमात्मा के न्याय, धारण, दया आदि गुण भी तभी सार्थक हो सकते हैं जब वह जगत् को बनावे। उसका अनन्त सामर्थ्य जगत् की उत्पत्ति, स्थिति प्रलय और व्यवस्था करने ही से सफल है। जैसे नेत्र का स्वाभाविक गुण देखना है, वैसे ही परमेश्वर का स्वाभाविक गुण जगत् की उत्पत्ति करके सब जीवों को असंख्य पदार्थ देकर परोपकार करना है।
- भारत की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसकी आध्यात्मिक निधि है। अतः सब कुछ खोकर भी उसकी रक्षा अनिवार्य है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३१ अंक ४१] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ पौष शु० ५ स० २०५० १६ जनवरी १९९४

कश्मीरी पण्डित भी हमारे ही भाई हैं

श्री वीरेन्द्र जी का मृत्यु से पूर्व लिखा गया अन्तिम लेख

पिछले दिनो ये कश्मीरी पण्डितो का एक सम्मेलन दिल्ली मे हुआ है जो कश्मीर से निकाल दिए गये हैं इनके घरो मे अब दहशतों का कब्जा है और जो कुछ सामान इनके घरों पर पड़ा था वह उन्होंने लूट लिया है। अब वह न घर के न घाट के। इनके पास सर छुपाने के लिए भी स्थान नही है।

जो कश्मीरी पण्डित दिल्ली मे एकत्रित हुए थे वह दूसरे देशों से भी आए थे सबकी एक ही माग थी कि उन्हे सर छुपाने के लिए कोई स्थान मिलना चाहिए। वह यह भी चाहतेहैं कि कश्मीर मे इनके लिए कोई स्थान निर्धारित कर दिया जाए जहा वह आरामसे रह सके कश्मीरी पण्डितो की यह माग उचित और न्याय सगत हैं। कश्मीरी पण्डित भी तो इस देश के नागरिक हैं। यदि अगर इन्हे अपना घर छोड़ना पड़ा हैं तो इसके लिए वह उत्तरदायी नही है। हमारी सरकार इनका विरोध नहीं कर सकी इसलिए कश्मीरी दर-दर भटक रहे हैं इनकी संख्या भी अधिक नहीं है फिर भी सरकार इनके लिए कुछ नहीं कर सकी। हमने देखा कि १९४७ मे जब देश का विभाजन हुआ था लाखो हिन्दू और सिख अपना घर बार छोड़कर भारत आ गए थे। भारत की उस समय की सरकार ने इनके लिए पूरा-पूरा प्रबन्ध किया था उस समय के कई शरणार्थी आज भी लखपति और करोड़पति बने हुए हैं। भारत की वर्तमान सरकार को इन कश्मीरी शरणार्थियों को कोई चिन्ता नहीं है।

इसे कश्मीर में रहने वाले मुसलमानो की अधिक चिन्ता है जो अपने आपको भारत का नागरिक भी नही समझते और कश्मीर को एक आजाद मुल्क देखना चाहते हैं। इनमे कई वह भी हैं जो पाकिस्तान के साथ जाना चाहते हैं। यह एक कटु सत्य है परन्तु इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि कश्मीर के सम्बन्ध मे भारत की कोई नीति नहीं है। केन्द्र मे जितने भी मन्त्री हैं सब अपनी-अपनी चलाते हैं कई बार वह एक दूसरे से टकरा जाते हैं।

तथ्य तो यह है कि पंडित जवाहरलाल के समय से ही कश्मीर के सम्बन्ध में भारत सरकार का दृष्टिकोण साफ नहीं रहा। शेख अबदुल्ला हर समय पण्डित जी के दिमाग पर सवार रहता था, जो वह चाहता था वही पण्डित जी करते थे।

पंडित जी की आखें तब खुली जब शेख अबदुल्ला ने आजाद कश्मीर की माँग रखी। पंडित जी फिर भी शेख के विरुद्ध कुछ भी करने को तैयार न थे। मौलाना अबुलकलाम आजाद और रफी अहमद किदवई ने पंडित जी को विवश कर दिया कि शेख अबदुल्ला को इस पद से हटाकर गिरफ्तार कर लिया जाए। शेख अबदुल्ला लगभग दस वर्ष जेल मे रहा और जब रिहा हुआ तो पंडित जी से समझौता करने की कोशिश की। कुछ दिन बाद पंडित जी स्वर्गवासी हो गए, जब इन्दिरा गांधी प्रधानमन्त्री बनी तो उनके और शेख के बीच समझौता हो गया।

शेख अबदुल्ला के बाद इन्दिरागाधी ने अनुचित ढग से फारुख अबदुल्ला को जम्मू-कश्मीर का मुख्यमन्त्री बना दिया और विवश हो उसे भी हटाना पड़ा। फलत नेहरू परिवार और अबदुल्ला परिवार की मित्रता ने कश्मीर का बेड़ा गर्क कर दिया भारत सरकार ७० हजार करोड़ रुपये से अधिक कश्मीर पर व्यर्थ व्यय कर चुकी है परन्तु वहा बना बनाया कुछ नही। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत की वर्तमान सरकार भी कुछ न कर सकेगी। कश्मीरी पंडित की समस्या सबसे अधिक कठिन समस्या है इसका एक ही उपाय हो सकता है जो कि स्वर्गीय सरदार पटेल करना चाहते थे। उनका यह सुझाव था कि पाकिस्तान से आए सेवा निवृत्त सैनिकों को जम्मू व कश्मीर मे बसा दिया जाए, इन्हे शस्त्र दिए जाये। यदि पाकिस्तान कोई शरारत करेगा तो यह हमारे सैनिक उसका उत्तर देंगे।

वर्तमान भारत सरकार की जो सूझबूझ है वह तो हम प्रतिदिन देखते हैं कोई आशा नही कि कश्मीर की समस्या का कोई हल निकट भविष्य मे निकल सके परन्तु जो कश्मीरी पंडित जगह-जगह भटक रहे हैं उनको बसाने का कोई न कोई प्रबन्ध होना चाहिए। क्यो न सरकार कश्मीर और जम्मू की सीमा पर चण्डीगढ़ की तरह एक नया शहर बना दें भारत की सेना इसकी सुरक्षा कर सकती है यह भी सम्भव है कि एक छोटा सा ऐसा शहर बन जाए और कश्मीरी पंडित वहा रहने लग जाए तो कश्मीरी मुसलमानो को ध्यान आए कि लड़ने से क्या लाभ ? क्यो न हम आराम से जीवन व्यतीत करें। आशा नही कि भारत सरकार कुछ करे इसमे कोई सूझ-बूझ का व्यक्ति नही जो यह सोच सके कि कश्मीरी पंडितो को किस प्रकार से बसाया जा सकता है। कश्मीरी पंडित स्वाभाविक शान्तिप्रिय होते हैं वह किसी से लड़ना नही चाहते परन्तु इन्हे यह न भूलना चाहिए कि दुनिया झुकती है झुकाने वाला चाहिए। इन्हे किसी न किसी रूप मे संघर्ष करना पड़ेगा इसका रूप क्या हो इसका निर्णय तो वह स्वय ही कर सकते हैं। भारत सरकार से इन्हे कोई आशा नहीं रखनी चाहिए।

—वीरेन्द्र

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाजी नेता के कारण बेदाग घर लौट गई सुधा

सहारनपुर, २२ दिसम्बर। दस दिन पूर्व नगर मजिस्ट्रेट हरीश वर्मा द्वारा वरिष्ठ पत्रकार व आर्य समाज के प्रधान बी० बी० गौतम की अभिरक्षा में सौंपी गई कश्मीरी युवती कु० सुधा को आज उसके पिता के यहां पहुंचने पर उनके हवाले कर दिया।

जम्मू कश्मीर के सलारपुर हाइड्रो प्रोजेक्ट मे कार्यरत शकरदास शर्मा की २१ वर्षीय युवा पुत्री परीक्षा मे फेल होने के कारण पिछली १२ नवम्बर को घर छोड कर चली गई थी तथा पिछले एक माह से भी अधिक समय से वह इधर भटक रही थी।

सुधा शायद गलत हाथो मे पड कर बर्बाद हो गई होती यदि उसकी मुलाकात आर्य समाज के प्रधान तथा पत्रकार बी० बी० गौतम से न होती श्री गौतम को उस युवती के बारे में जब मालूम पड़ा जब कि महिला होमगार्ड की कमाण्डेंट रीटा मेहता द्वारा गत १२ दिसम्बर को जबरन उसकी शादी देवबन्द के अधेड़ व्यक्ति से की जा रही थी।

श्री गौतम ने आर्य समाज के अन्य सहयोगियों विद्यासागर तथा विनय कुमार की मदद से न केवल सुधा को गलत हाथो मे पड़ने से बचाया बल्कि अदालत मे पेश करने के बाद उसे बेटी की तरह अपने घर मे रखा। हालांकि इसके बदले मे उन्हें तरह-तरह की बातों का सामना करना पड़ा बल्कि यहा तक कि गुण्डो द्वारा उन पर व उनके साथियों पर हमला भी कराया गया। लेकिन उन्होने इसकी कोई परवाह न करते हुए युवती की इज्जत बचाने के लिए अपने धर्म और कर्तव्य का निर्वाह किया।

हालांकि न्यायालय मे पेश होने के बाद नगर मजिस्ट्रेट को बयान देने तथा श्री गौतम को सौंपे जाने तक उक्त युवती ने गलत बयानी की तथा झूठ बोला। उसने बताया कि उसके माता पिता की मृत्यु हो जाने के बाद वह अकेली पड़ जाने के कारण नौकरी की तलाश मे दिल्ली गई लेकिन रोजगार न मिलने के बाद वह वापस अपने घर लौटना चाहती थी।

उसने बताया कि पांच दिन तक दिल्ली में लोधी कालोनी में रहने वाली आन्टी शकुन्तला डोगरा के यहां रहने के बाद वह जब ट्रेन से वापस लौट रही थी कि रास्ते मे उसकी मुलाकात सहारनपुर मे रहने वाली महिला होमगार्ड कमाण्डेंट रीटा मेहता से हुई जो उसे अपने घर ले आई तथा तब से वह उसके पास ही रह रही थी।

सुधा के मुताबिक हालाकि श्रीमती मेहता ने उसके साथ अच्छा बर्ताव किया लेकिन इसी बीच उन्होने उसे शादी के लिए मनाना चाहा तथा लड़का दिखाये बिना ही उसकी शादी तय कर दी तथा गत बारह दिसम्बर को जब यह शादी होने जा रही थी तो एकाएक श्री गौतम को इस बारे मे पता लगा और उन्होने रीटा मेहता के चगुल से छुड़ाया तथा नगर मजिस्ट्रेट हरीश वर्मा की अदालत मे पेश किया जहा से उसे श्री गौतम की अभिरक्षा मे सौंप दिया।

मजे की बात यह है कि नगर मजिस्ट्रेट, बी० बी० गौतम तथा पत्रकार तक को सुधा ने अपने घर का गलत पता बताया तथा मजिस्ट्रेट के समक्ष दिए गये बयान मे उसने अपने को जम्मू कश्मीर के जिला ऊधमपुर के थाना रियासी की निवासी बताया। जिस पर श्री गौतम ने खतो-किताब की लेकिन उस पर जवाब उन्हें नहीं मिला।

पिछले दिनो जब सुधा के पिता शकर दास ने दिल्ली से प्रकाशित दैनिक समाचार कौमी आवाज मे उक्त समाचार पढ़ा तो वह आज सवेरे यहा पहुचे तथा श्री गौतम का पता मालूम करके सीधे उनके घर गये जहां अपने पिता को अचानक पहुचा देख सुधा पहले तो हक्की बक्की रह गयी लेकिन फिर एकाएक उनसे लिपट कर दहाड़े मार कर रो पड़ी। बेटी की तलाश मे महीने भर से इधर उधर भटक रहा उसका पिता शकर दास भी अपने आसू नहीं थाम पाया तथा उसके भी हिचकियां छूट गयी।

सुधा के पिता के पहुचने पर श्री गौतम को सारी हकीकत का पता लगा तथा उन्होने सारी कहानी बताते हुए कहा कि उन्होने अपना फर्ज पूरा किया है अब वह सुधा को अपने साथ ले जा सकते हैं।

सुधा के पिता को शायद उसके बारे मे कुछ पता भी नहीं चल पाता यदि समाचार पत्रो ने उससे सहानुभूति जताते हुए तथा श्री गौतम द्वारा किए इस नेक काम को समाचार पत्रो मे न उछाला होता।

पिछले करीब डेढ़ माह से माता पिता से दूर रहने वाली सुधा भी खुशी खुशी उनके साथ अपने घर जाने को तैयार हो गई।

श्री गौतम ने कानूनी प्रक्रिया के तहत आज सुधा तथा उसके पिता श्री शकर दास को एस० डी० एम० सदर स० हरबन्स सिंह चुग के समक्ष पेश किया जहा उन्होने दोनो के बयान लेने के बाद सुधा को उसके पिता के हवाले कर दिया।

दस दिन से भी अधिक समय तक अपने घर मे सुधा को बेटी की तरह से देखने वाले बी० बी० गौतम तथा उनके सहयोगी विद्यासागर तथा विनय कुमार ने उसे बेटी की तरह अपने घर से विदा किया तथा वह अपने फर्ज को अजाम तक पहुचा देने की खुशी में छलक पड़े।

दस दिनो तक श्री गौतम के घर मे माता पिता तथा भाई, बहन का स्नेह पाने वाली सुधा भी बिछुड़ते समय अपने आसू नहीं रोक पाई।

इस तरह श्री गौतम ने एक गुमराह युवती को गलत हाथों में जाने से रोक कर न केवल पत्रकार धर्म बल्कि आर्य समाज के सम्मान को बढ़ाया।

श्री गौतम ने उक्त पुनीत कार्य के लिए अधिकारियों तथा आर्य समाज के सिपाहियों व पत्रकारों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि हालांकि इस मामले में उन पर कई तरह के लांछन भी लगाने के प्रयास किये गये लेकिन उन्होने किसी की परवाह न करते हुए आर्य समाज का सच्चा सिपाही होने हुए अबलाओं तथा बेसहाराओं को सहारा देने के अपने कर्तव्य को निभाया है।

—दैनिक जागरण से साभार

हरबन्स लाल शर्मा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान

जालन्धर, ३ जनवरी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की कार्यकारिणी की एक आपात बैठक कल यहां सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन में स्वामी सर्वानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ दीना नगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्व प्रधान स्वर्गीय श्री वीरेन्द्र को श्रद्धांजलि भेंट करते हुए शोक प्रस्ताव पारित किया गया और उनकी आत्मा की शान्ति व सद्गति के लिए प्रार्थना की गई। इसके पश्चात सभी सदस्यों ने इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का नया प्रधान किसको बनाया जाए।

सभा के महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट ने प्रस्ताव रखा कि श्री वीरेन्द्र के चले जाने से जो प्रधान पद रिक्त हुआ है उसके लिए वह श्री हरबन्सलाल शर्मा का नाम प्रस्तुत करते हैं क्योंकि इस समय वही एक ऐसे व्यक्ति हैं जो यह स्थान ले सकते हैं। इनसे योग्य और कोई व्यक्ति उन्हें सभा में दिखाई नहीं देता। यह सभी को साथ लेकर चलने वाले हैं और इनके प्रधान बनने से सभा और अधिक उन्नति करेगी।

श्री योगेन्द्र पाल सेठ, श्री आशानन्द आर्य, श्री रणवीर भाटिया, श्री मनोहर लाल आर्य प्रिंसीपल अश्विनी कुमार शर्मा तथा दूसरे सभी सदस्यों ने इसका समर्थन किया और सर्वसम्मति से श्री हरबन्स लाल शर्मा को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान निर्वाचित कर लिया गया।

मानव सुधार सम्मेलन

पश्चिमी दिल्ली की समस्त आर्य समाजों तथा अन्य धार्मिक एवं सामाजिक संगठनो के सहयोग से २३ जनवरी को पैराडाइज पब्लिक स्कूल सी-४७ किरन गार्डन नजफगढ़ रोड पर मानव सुधार सम्मेलन श्री तिलकराज जी चोपड़ा की अध्यक्षता में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती मुख्य अतिथि के रूप में पधार रहे हैं। तथा इस समारोह मे प्रो० जगदीश मुखी, श्री साहबसिंह वर्मा, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, डा० धर्मपाल एवं श्री सुरेन्द्र जी आदि नेता पधार रहे हैं। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा नेताओं के विचार सुनने हेतु अधिक से अधिक सख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाये।

—संयोजक पण्डित अशोक कुमार
वाद प्रचार समिति, दिल्ली

साम्प्रदायिकता की लहर रोकने का ढिंढोरा पीटने वाले नेताओं ने जातिगत युद्ध की नींव रखी

—मनमोहन शर्मा

देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश मे दलितो पिछडो और अल्पसख्यको के गठजोड़ ने सत्ता पा ली है। मुलायम सिंह यादव बहुजन समाज के सर्वेसर्वा कांशीराम की बैसाखियो के सहारे लखनऊ के तख्त पर बैठ गये हैं। कांशीराम ने यह दावा किया है कि वह १ ॰ दिल्ली के तख्त पर कब्जा कर लेंगे। भारतीय जनता पार्टी के नेतागण गत ५र्ष से ही यह नारा लगा रहे थे "आज पांच प्रदेश, कल सारा देश' मगर हाल के चुनाव परिणामो ने दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ़ होने के उनके सारे सपने धूल मे मिला दिये हैं। सामाजिक न्याय का राग अलापने वाले और साम्प्रदायिकता की लहर को रोकने के नाम पर बगले बजाने वाले नेतागण यह क्यो भूल रहे हैं कि उन्होने इस देश में जातिगत युद्ध की नींव रख दी है।

जनता दल के वरिष्ठ नेता श्री राम विलास पासवान यह स्वीकार करते हैं कि कांशीराम अपने वोट बैंक को पक्का करने की खातिर देश को जाति द्वेष की ज्वाला मे धकेल रहे हैं। उन्हें देश हित की बजाय अपनी कुर्सी की ज्यादा फिक्र है। कांशीराम के एक पुराने सहयोगी श्रीमान रघुनाथ सिंह का कहना है कांशीराम मूलत तानाशाह हैं वह दलितों को सवर्णों के खिलाफ भड़का कर ऐश कर रहे हैं। वह उन पर कई तरह के गभीर आरोप भी लगाते हैं। आम दलित उन्हें अपना नेता मानते हैं। उनका कहना है कि वह सच्चे समाज उद्धारक हैं। वह शताब्दियों से शोषित-दलितो का उत्थान चाहते हैं। यदि कांशीराम की योजना सफल हो गई तो वह भारत का पहला पजाबी प्रधानमन्त्री होगा।

यह कहना भी कठिन है कि मुसलमानो यादवो और हरिजनो का नया बना यह मोर्चा कितने दिनो तक टिक पायेगा। कांशीराम का लक्ष्य हर प्रकार के समीकरण बैठाकर दिल्ली के तख्त को पाना है। उनकी रणनीति यह है कि विभिन्न पार्टियों को आपस में लड़वाया जाए और जब वह कमजोर हो जाए तो उनके वोट बैंक को अपनी ओर मोड़ा जाए। इस नीति से खुद कांशीराम भी इन्कार नहीं करते। उनका कहना है कि पजाब विधान सभा के १९८६ के चुनावों में उनके उम्मीदवारों ने क्योंकि कांग्रेस के वोट बैंक को तोड़ लिया था इसलिए बहुजन समाज पार्टी की कृपा के कारण ही कांग्रेस हारी और अकाली सत्ता मे आए। उनका यह भी दावा है कि १९९० के चुनाव में मध्य प्रदेश मे उनकी पार्टी ने ८६ उम्मीदवार खड़े किये थे इनमे से केवल दो जीते और उन्हें १२ प्रतिशत वोट प्राप्त हुए मगर वह कांग्रेस का सफाया करने मे सहायक बने। उनका यह भी तर्क है कि ब्राह्मणवादी राजनीतिक पार्टिया जिस कदर कमजोर होंगी उतना ही बहुजन समाज पार्टी पुष्ट होगी।

कांशीराम एक ओर तो नरसिम्हाराव को अन्तिम मुगल सम्राट की सज्ञा देते हैं जबकि दूसरी ओर वह इका की लखनऊ रैली मे भीड़ बढाने के लिए अपने कार्यकर्ता भेजने का भी ऐलान करते हैं।

कांशीराम के बारे में मुलायमसिंह का दावा है कि वह उनके मार्ग दर्शक हैं और क्योंकि उनके सिर पर कांशीराम जैसे अनुभवी व्यक्ति का साया है इसलिए वह अपने भविष्य के बारे में निश्चित हैं। इसके विपरीत मुलायम सिंह को कुर्सी तक पहुचाने वाले किंग मेकर कांशीराम का कथन है कि उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के गठबन्धन की सरकार में प्रयोग का परिणाम छह महीने तक आ जाना है। इसके बाद किसी अन्य प्रयोग के बारे में विचार किया जाएगा। वह यह भी कहते हैं कि मुलायम सिंह के साथ उनका गठबन्धन स्थायी नहीं है, यह तो वर्तमान की राजनीतिक मजबूरी है।

इसके साथ ही कांशीराम उद्योगपति जयन्त मल्होत्रा के साथ प्रधानमन्त्री श्री नरसिम्हा राव से भी गहरा सम्पर्क बनाए हुए हैं। उनका कथन है कि इका एक डूबता हुआ जहाज है हम इसलिए इसमें घुसने का प्रयास कर रहे हैं ताकि उनके वोट बैंक पर कब्जा करके दिल्ली में सत्ता पर कब्जा किया जा सके।

वैसे उत्तर प्रदेश मे अभी तक साझी सरकारो का अनुभव सुखद नही रहा है। सबसे पहले चौधरी चरणसिंह ने जन कांग्रेस की सरकार १९६७ मे बनाई थी इसमें सयुक्त समाजवादी पार्टी, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी, जनसंघ, स्वतन्त्र पार्टी, रिपब्लिकन पार्टी, कम्युनिस्ट शामिल थे मगर एक वर्ष से पहले ही आपसी मतभेदो के कारण यह सरकार टूट गई।

१९७० मे चौधरी चरण सिंह ने भारतीय क्रांतिदल बनाया। उनके नेतृत्व मे गैर कांग्रेसी दलो की सरकार फरवरी १९७० मे बनी मगर यह आठ महीने बाद ही आपसी झगड़ो के कारण टूट गई। इसके बाद सगठन कांग्रेस के श्री टी, एन. सिंह के नेतृत्व मे जो सरकार बनी वह भी छह महीने से ज्यादा टिक न सकी।

कांशीराम के उत्थान की कहानी बहुजन समाज पार्टी के सर्वेसर्वा कांशीराम शुरू से ही विवादो के केन्द्र बने रहे हैं। भले ही उनके दृष्टिकोण से कोई सहमत न हो मगर उनकी सादगी, सच्ची लगन, अनथक परिश्रम से सभी प्रभावित होते हैं।

कांशीराम पजाब के रोपड़ जिला के निवासी हैं। उन्होने पजाब विश्वविद्यालय से बी एस सी पास की, और इसके बाद वह महाराष्ट्र मे केन्द्रीय सरकार के एक अनुसधान केन्द्र मे नौकर हो गये। अम्बेडकर जयन्ती की छुट्टी न होने के कारण उन्होने सरकारी नौकरी को लात मार दी। वह रिपब्लिकन पार्टी मे शामिल हुए किन्तु उनका शीघ्र ही इससे मोह भग हो गया। इसके बाद वह दिल्ली चले आए और करोल बाग के रैगरपुरा क्षेत्र के एक कमरे मे रहने लगे। दलितो के उत्थान की धुन के कारण उन्होंने विवाह नहीं किया। दिल्ली के पुराने पत्रकारो को आज भी कांशीराम का वह रूप याद है जबकि वह मीलो पैदल चलकर राजधानी के समाचारो पत्रों के दफ्तरो मे प्रेस नोट बाटने आया करते थे। इन्हें काफी समय तक समाचार पत्रो ने कोई महत्व नहीं दिया।

१९७८ में उन्होंने आदिवासी एव अनुसूचित जातियो के सरकारी कर्मचारियो को सगठित करने के लिए Backward and Minority Communities Fadration की नीव रखी। इस फैडरेशन के सदस्यो ने कांशीराम को एक राष्ट्रीय नेता के रूप में उभारने मे विशेष भूमिका निभाई। इसके बाद दलित शोषित समाज सघर्ष समिति (डी एस ४) का उदय हुआ। सगठन की ओर से देश के हर चुनाव में उम्मीदवार खड़े किये गये मगर वे लगातार पराजित होते रहे। इन चुनावो मे एक नारा प्रचलित हुआ था कि यह था—बामन, बनिया, ठाकुर चोर बाकी हैं सब डी एस फोर। भले ही डी एस फोर को हर चुनाव मे शुरू मे मुह की खानी पड़ी हो मगर उनका दलितो मे जनाधार जरूर बना।

१४ अप्रैल १९८४ को कांशीराम ने बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की घोषणा करते हुए कहा कि दलितो को आरक्षण की बैसाखियो की कोई जरूरत नही है। हम तो सत्ता चाहते हैं। जब तक दिल्ली के तख्त पर हमारा अधिकार नहीं होगा हम कभी चैन से नही बैठेंगे। उसी दौरान बिजनौर के उपचुनाव में कांशीराम ने अपनी पार्टी की महा सचिव मायावती को बाबू जगजीवन राम की बेटी श्रीमती मीरा कुमार के मुकाबले मे मैदान मे उतारा। उन दिनो कांशीराम की जनसभाओ की शुरुआत यू होती थी—अगर इस सभा में कोई बामन बनिया बैठा हो तो वह उठकर चला जाए, हमे उनके वोट नही चाहिए। इसी चुनाव के दौरान ये यह नारा सुनाई दिया—'मुस्लिम जाटव भाई-भाई, हिन्दू,कौम कहा से आई' इसके बावजूद मायावती श्रीमती मीरा कुमार के मुकाबले में हार गई। हरिद्वार के उपचुनाव मे भी मायावती जीत न पाई। इलाहाबाद के लोकसभा के उपचुनाव मे जब वी पी सिंह की इका के सुनील शास्त्री से टक्कर हुई तो कांशीराम भी मैदान मे कूद पड़े उन्होने ५० हजार वोट प्राप्त करके सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

(क्रमश)

राष्ट्र विकास में गोवंश का योगदान

—शरद कुमार साधक

भारत में गाय केवल दुधारू पशु नहीं है। वह सारी कामनायें पूरी करने वाली कामधेनु है। इससे लाखो परिवारो का पालन-पोषण होता है। डेयरी इण्डिया १९८७ की रिपोर्ट के अनुसार देश के ४१ हजार ग्रामीण दुग्ध उत्पादक सहकारी संगठनो के लगभग पचास लाख से ज्यादा ग्वाला परिवार प्रतिदिन ८० लाख टन दूध बेच कर अपनी आजीविका चलाते हैं। सन १९८७ मे दुग्ध उत्पादन चार करोड़ टन के आस पास रहा, जो अब बढ़ कर पांच करोड़ ४१ लाख टन हो गया है। दुग्ध उत्पादन में ग्वाला परिवार के अलावा सरकारी और निजी डेयरियां तथा गोभक्तो की बड़ी जमात सक्रिय है। भारतीय अर्थ-व्यवस्था में पशु धन का १५ हजार करोड़ रुपये का योगदान माना जाता है। उसमे ७० प्रतिशत दूध तथा उसके उत्पादो का हिस्सा है।

पशुओ की उचित देख भाल हो तो गोरस उत्पादो मे भारी वृद्धि की सम्भावना है। समुचित सार संभाल तथा सतुलित दाना-पानी देने की व्यवस्था कर वाराणसी स्थित रामेश्वर गोशाला मे सुरभि शोध संस्थान ने सिद्ध कर दिखाया है कि १ लीटर ८०० ग्राम दूध देने वाली गायें ४ लीटर तक दूध देने लगीं। उनकी बछिया ७ लीटर तथा उसकी भी बछिया ११ लीटर दूध देने वाली हुई। जहा औसत भारतीय के लिए १०० ग्राम दूध दुर्लभ है, वहां ५०० ग्राम तक दूध सहज सुलभ हो सकता है तथा दुग्ध उत्पादों मे लग कर लाखो परिवार अपनी रोजी रोटी चला सकते हैं।

अनुमान है कि देश मे ४ करोड़ ६ लाख ७० हजार हल तथा १ करोड़ ३० लाख बैलगाड़िया है और उनसे जुड़े तीन करोड़ लोगो का जीवन-यापन होता है। यदि हलो की जगह ट्रैक्टर लें तो उसके लिए २ लाख ८ हजार करोड़ रुपयो की पूंजी अपेक्षित होगी, जो कर्ज मे आकंठ डूबे हमारे देश के लिए जुटा पाना मुश्किल है इस समय ट्रैक्टरो से जितनी जुताई होती है, उतनी तो भैंसे कर देते हैं। बैल उससे ८ गुनी अधिक जुताई कर रहे हैं। खेती मे लगभग ५ करोड़ रुपये की पशु शक्ति लगती है। इसी तरह ट्रक और मालगाड़िया जितना माल ढोती है, उससे अधिक ही बैलगाड़ियो से ढुलाई होती है। ये ऊबड़ खाबड़ रास्तो पर जाती हैं और घर के दरवाजे तक माल पहुंचाती है। ढुलाई मे पशु शक्ति का उपयोग होने से २५ अरब रुपये की डीजल की बचत होती है।

दुनिया की २.५ प्रतिशत जमीन भारत के पास है, किन्तु पशु १६ प्रतिशत हैं। उनकी शक्ति का पूरा-पूरा उपयोग हो तो बेरोजगारी दूर करने में भारी मदद मिल सकती है। दुनिया की १२ प्रतिशत कृषि भूमि भारत मे है और उसमे भी १८ प्रतिशत भूमि कृषि योग्य है। जो किसान केवल खेतीहर हैं और उर्वरको का इस्तेमाल कर मालामाल होने की कोशिश मे हैं। उन पर 'चार दिनो की चादनी फिर वही अन्धेरी रात' की कहावत चरितार्थ होती है।

जिन किसानो के पास गोवंश हैं और उनके गोबर गोमूत्र का उपयोग खाद मे हो रहा है उनकी आमदनी तथाकथित उन्नत कृषि करने वाले किसानो से डेढ़ गुनी होती है। प्रसिद्ध भू रसायन विशेषज्ञ डा० एच० एच० कोह ने कहा भी है कि आधुनिक कृषि से रोग तथा कीटाणु बढ़ते हैं, क्योंकि उर्वरको का इस्तेमाल बढ़ा है, वहीं परम्परागत कृषि से जमीन की उर्वरा शक्ति कायम है। उपज स्वादिष्ट होती है और पशु तथा मानव की क्षमता का पूरा उपयोग होता है। आज ऐसा नहीं है, इसी कारण भारत की ८८ करोड़ की आबादी मे लगभग आधे लोग गरीब हैं और उन में से आधे लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं।

सरकारी व्याख्या के अनुसार गरीबी रेखा से नीचे रहने वालो की मासिक आय ६० रुपये थी, जो अब १२० रुपये आकी जा रही है। बड़े उद्योगों के भरोसे २२ करोड़ लोगों यानी पांच करोड़ परिवारो का कब जीवन स्तर उठेगा, यह कहना कठिन है। किन्तु गोपालन की योजना से तत्काल उन्हें लाभ पहुंचाने की गारंटी दी जा सकती है। योजना आयोग को इस बारे में गम्भीरता से सोचना चाहिए।

गोपालन के केन्द्रीय यांत्रिकी अनुसंधान ने बैलो की उत्पादकता बढ़ाने तथा किसानो का श्रम कम करने हेतु एक पशु-चलित ट्रैक्टर बनाया है। यह हल के मुकाबले तीन चार गुना कार्य करता है। इसी तरह पंक्चर रहित बैल-

गाड़िया निर्मित हुई हैं, जिससे बैलों पर भार कम पड़ता है और परिवहन की क्षमता बढ़ी है। बम्बई के नेशनल इन्स्टीट्यूट फार ट्रेनिंग इन इन्डस्ट्रीयल इन्जीनियरिंग (नाईटी) ने ऐसा उपकरण बनाया है जिससे रेहट के साथ बैल के घूमने पर विद्युत धारा उत्पादित होती है। इस उपकरण के सहारे दो बैल एक हार्स पावर अर्थात ७८६ वाट बिजली पैदा कर सकते हैं। भारत के नेताओं ने स्वयं नैरोबी के ऊर्जा सम्मेलन में स्वीकार किया था कि भारत में हमारे सभी बिजलीघरों जिनकी अधिष्ठापित क्षमता ३१ हजार मेगावाट है, से अधिक शक्ति पशु प्रदान करते हैं। यदि उनको हटा दिया जाय तो बिजली उत्पादन पर और २५४० अरब डालर की पूंजी निवेश करने के अतिरिक्त कृषि अर्थव्यवस्था को खाद और सस्ते ईंधन की हानि होगी। गोबर गैस नडेप खाद चारा काटने की बैल चालित मशीन से मिलने वाले लाभ कौन नहीं जानता? विभिन्न रूपो मे पशुओं से ४० हजार मेगावाट के बराबर ऊर्जा मिलती है। इससे देश को २७ हजार करोड़ रुपये का लाभ है। आधे टन वजन की गाय दिन रात मे १२०० वाट गर्मी देती है। जर्मनी के विद्युत अभियन्ता संघ ने २० गायो से एक बड़ा मकान गर्म रखने का प्रयोग किया और उससे वर्ष मे तीन हजार लीटर से अधिक तेल की बचत की। विदेशों में जहां इस तरह ऊर्जा स्रोत के रूप में गायों को बढ़ावा मिल रहा है वहां भारत मे गोहत्या बढ़ रही है। भारतीय चमड़ा अनुसंधान संस्थान के अनुसार १ करोड़ ८ लाख गोवंश का वध १९८७ मे हुआ। १९९१ तक इसमें और वृद्धि ही हुई होगी, क्योंकि ८ वीं पंचवर्षीय योजना की पुस्तक के अनुसार देश मे ३६०० बूचड़खाने हैं। नये आधुनिकतम बूचड़खानों को भी लाइसेंस दिए जा रहे हैं। सरकार इस गोमांसवर्ष मे ५०० करोड़ रुपये का मांस निर्यात करना चाहती है। यह कितनी बड़ी त्रासदी है। इसे देख कर रघुवंश की वह उक्ति याद आती है, जिसमें गाय की रक्षा के लिए अपने आप को समर्पित करने वाले राजा दिलीप से सिंह ने कहा है—'अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छन् विचारमूढ प्रति भासि मे त्वम्।'

छोटी सी चीज के लिए बहुत बड़ा लुटा देने वाले विचार मूढ हैं। यह विचार मूढ़ता ही है, जो वृहद बम्बई नगरपालिका द्वारा संचालित देवनार बूचड़खाने में प्रति वर्ष १८० करोड़ रुपये मूल्य का पशुधन काटा जा रहा है। यदि यह कटना बन्द हो जाये तो ३ लाख ७० हजार टन अनाज, १० लाख टन चारा, ३० लाख टन खाद २० करोड़ ५८ लाख ३७ हजार टन दूध और ९ लाख ८० हजार लोगो को रोजगार मिल सकता है। अतः ग्राम एवं राष्ट्र विकास के लिए अधिष्ठान रूप गोवंश का सार्थक उपयोग करें, ताकि कुपोषण रहित पौष्टिक समाज, स्वस्थ पर्यावरण, स्थानीय उद्योग बढ़े और पुरुषार्थ प्रकट हो। (१६-१२-९३ नवभारत टाइम्स)

विभिन्न मत-मतान्तरों के

मुक्ति सम्बन्धी दृष्टिकोण

सत्यार्थप्रकाश प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त प्रतियोगी श्री मोहनलाल शर्मा 'आर्य पुष्प', छोटी सादड़ी चित्तौड़गढ़ के मुक्ति सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

मनुष्य जन्म को समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ मानकर इसका परम लक्ष्य मुक्ति या मोक्ष प्राप्त करना प्रायः सभी सम्प्रदाय व मतों ने स्वीकार किया, किन्तु मुक्ति के आशय (Concept), स्वभाव (Nature), मुक्ति पाने के साधन, प्रक्रिया एवं मुक्ति काल में जीवात्मा की स्थिति, तथा व मुक्ति की अवधि आदि के बारे में भिन्न-२ मतों में मतभेद हैं।

कुछ प्रमुख रूप से प्रचलित मत-मतान्तरों में मुक्ति सम्बन्धी दृष्टिकोण निम्नानुसार है—

(१) पौराणिक या वैष्णव मत—(जो अपने आपको सनातनी मानते हैं किन्तु वास्तव में ये मत सनातन आदि काल से न चलकर बहुत बाद में चला, राजा भोज से भी ११० वर्षों बाद का उल्लेख महर्षि दयानन्द ने किया है)

इस मत में सानुज्य अर्थात छोटे भाई की तरह ईश्वर के साथ रहना, सारूप्य अर्थात जैसी उपासनीय देव की आकृति है वैसा बन जाना, सामीप्य अर्थात सेवक की भांति ईश्वर के समीप रहना व सायुज्य अर्थात ईश्वर से संयुक्त हो जाना, इन चार प्रकार से सालोक्य अर्थात ईश्वर लोक में निवास करना ही मोक्ष माना है। जो सर्वथा कपोल कल्पित है क्योंकि (बैकुण्ठ नाम से) सर्वव्यापक ईश्वर का कोई लोक विशेष नहीं, उसकी कोई आकृति नहीं वह तो निराकारहै, उसका कोई रूप रंग, नहीं वह तो अन्तर्यामी होकर सब जगत में बसा है, इसलिए नौकर की तरह उसके पास रहना या संयुक्त होकर रहना (क्योंकि वह पृथक नहीं है) असंभव है, उक्त विचार मूर्खता पूर्ण है।

पौराणिक मत में मुक्ति पाने के भी सस्ते साधन बताये हैं जैसे 'नाम उचारा' अर्थात केवल एक बार प्रभु नाम स्मरण या श्रवण कर लेना, मरते समय मुख में तुलसी पत्र या गंगा जल की एक बूंद मात्र डाल देना, या अनायास ही कान में राम, विष्णु या नारायण शब्द सुनाई पड़ जाना आदि। जो बुद्धि ग्राह्य नहीं है क्योंकि प्राणी द्वारा मन, वचन, कर्म द्वारा किये कृत्य ही उसे शुभ या अशुभ फल देने वाले हैं जो किसी दशा में भी न्यायकारी प्रभो की न्याय व्यवस्था में क्षम्य नहीं है। फिर उपरोक्त कथन कैसे सही हो सकता कि जीवन भर कुछ भी करते रहें व अन्त समय में केवल नाम उच्चारण या तुलसी पत्र या गंगा जल की बूंद मात्र से मोक्ष प्राप्त हो जाय? क्या मोक्ष मुक्ति इतनी सुलभ है?

इस मत में 'मोक्ष' का कोई सही अर्थ भी नहीं किया। कल्पित स्वर्ग में भौतिक सुखों के साथ ऐश्वर्य शाली रहना ही मुक्ति माना, जो गलत है।

इसी प्रकार इस्लाम मत में—सातवें आसमान पर क्यामत के दिन अल्लाह द्वारा जिन्न (आत्मा) को जन्नत (स्वर्ग) में पहुंचना जहां अनेक परियां उसकी खिदमत (सेवा) में रहती हैं। वहां वह जिन्न अनेक स्त्रियों के साथ भोग विलास का आनन्द भोगता है यह मुक्ति मानी हैं।

ईसाई मत में परमेश्वर चौथे आसमान पर आत्मा को विवाह, बाजों-गाजों के साथ नवीन वस्त्र आभूषण धारण करवा कर आनन्द देता है यही मुक्ति है।

वाम मार्गीय मतों (जैसे चारवाक आदि) में आत्मा श्रीपुर में जाकर लक्ष्मी के सदृश्य स्त्रियों के साथ मद्य मांस खा पीकर राग-रंग में मस्त होना, उड्डीस तन्त्रानुसार घर की चारों दिशाओं में रखी चार बोतल मद्य की बारी-बारी से पी जावे और तब तक पीते रहें जब तक कि लकड़ी के समान जमीन पर न गिर जावे। फिर नशा उतरने पर फिर उसी प्रकार मद्य पीवें। इस प्रकार तीन बार करने पर उसका पुनर्जन्म न होगा। किन्तु सच तो यह है कि ऐसे नीच का पुनः मनुष्य जन्म होना ही कठिन है वह तो बहुकाल पर्यन्त नीच कुत्ते, कीड़े-मकोड़े की योनि में पड़ा रहेगा। वाम मार्ग में तो माता, पुत्री के साथ समागम करना, मांस-मद्य खाना-पीना, राग-रंग करना ही धर्म सिद्धि बताया है। (एकादश समुल्लास सत्यार्थ प्रकाश)

वेदान्ती लोग इस जगत को ही मिथ्या मानकर ब्रह्म में ही लीन हो जाने को मोक्ष मानते हैं, उनका ब्रह्म से जगत (सृष्टि) से अलग जगह है। 'अहं ब्रह्म अस्मि' में हो ब्रह्म हूं मानकर वैदिक त्रैतवाद को नकारते हैं।

मोक्ष मुक्ति के नाम पर कैसी-कैसी मूर्खता पूर्ण, हास्यास्पद, आश्चर्यजनक अचम्भित अवधारणाएं हैं और वह भी धर्म के नाम पर? फिर मानवता का पतन क्यों न हो?

भोग विलासिता को ही मुक्ति के नाम पर अधिकतर मतों ने प्राथमिकता दी। अभी हाल के वर्षों में ही तथाकथित आचार्य रजनीश ने 'योग से भोग की ओर' जैसी मिथ्या पाखण्डी शिक्षा बताकर लोगों को भ्रमित किया। परिणाम क्या हुआ सब जानते हैं—खुद स्वयंभू भगवान रजनीश को कैद के बाद एड्स जैसे घातक रोग से मरना पड़ा।

जैन एवं बौद्ध मत—इन नास्तिक मतों में एक मोक्ष शिला की कल्पना की गई जो तथाकथित शिवपुर में स्थित है वहां मुक्ति काल में जीवात्मा के चुपचाप बैठी रहने को मोक्ष मानते हैं। भला ऐसी मुक्ति को तो कोई मूर्ख ही चाहेगा। बुद्धिमान कदापि नहीं! ये दोनों मत लगभग समान होने से इन्हें एक ही मान सकते हैं। इन्होंने भावना चतुष्टय (माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक व वैभाषिक) अर्थात इन पूर्वोक्त भावनाओं से सकल वासनाओं की निवृत्ति से शून्य रूप निर्वाण ही मुक्ति मानते हैं। तथा द्वादशायतन अर्थात बारह प्रकार के स्थान विशेष बनाकर सब प्रकार से पूजा करने से मोक्ष प्राप्ति होती है। अर्थात पांच ज्ञानेन्द्रियों, पांच कर्मेन्द्रियों तथा मन व बुद्धि को आनन्द में प्रवृत्त रखना ही मुक्ति का मार्ग है। इस बाबत १२वें समुल्लास में महर्षि दयानन्द लिखते हैं—

'रत्नासार भाग-१, पृष्ठ २३ पर महावीर तीर्थंकर गौतम जी से कहते हैं कि ऊर्ध्वलोक (ऊपर) में एक सिद्ध शिला स्थान है। स्वर्गपुरी के ऊपर पैंतालीस लाख योजन लम्बी और उतनी ही पोली है तथा ८ योजन मोटी है। जैसे मोती का श्वेतहार या गोदुग्ध है उससे भी उजली है। सोने के समान प्रकाशमान और स्फटिक से भी निर्मल है। वह सिद्ध शिला १४ लोक की शिखा पर है और उस सिद्ध शिखा के ऊपर शिवपुर धाम, उसमें भी मुक्त पुरुष अधर रहते हैं। वहां जन्म मरणादि कोई दोष नहीं और आनन्द करते रहते हैं। पुनः जन्म मरण में नहीं आते। सब कर्मों से छूट जाते हैं।" ये जैनियों की मुक्ति है जो निराधार कपोल कल्पित, अवैज्ञानिक होने से अमान्य है।"

जैसे वैष्णव मत में बैकुण्ठ, कैलाश, गोलक, श्रीपुर आदि पौराणिक गाथा आरित चौथे आसमान पर ईसाई, सातवें आसमान पर इस्लाम मत में मुक्ति के स्थान लिखे हैं वैसे ही जैनियों की सिद्ध शिला है।

ऊंचा-नीचा व्यवस्थित पदार्थ नहीं, क्योंकि कहां से माना जाय। यह निश्चित नहीं क्योंकि भारत के लिए अमेरिका का स्थान नीचा व अमेरिका के लिए भारत का भूभाग स्थल ऊंचा होगा?

दूसरा की उस शिला-शिवपुर से बाहर जाते ही मुक्तावस्था समाप्त हो जायेगी अर्थात पुनः बंधन में आत्मा आ जायेगी तो फिर ये कैसा मोक्ष? यदि हमेशा उस शिला पर ही निर्भर रहना पड़े तो मुक्ति के नाम पर ये अपने आप में बन्धन हैं।

ये सब मुक्ति के नाम पर भ्रम ही है, मुक्ति को बिना वेदोक्त अर्थ के नहीं जान सकते? (क्रमशः)

पाकिस्तान में अपनी संपत्ति से वंचित किए जा रहे हैं ईसाई

—नीलम गुप्ता

लाहौर, २७ दिसम्बर। पाकिस्तान मे ईसाइयों को कानून गुस्ताख-ए-रसूल के तहत तो सबसे ज्यादा परेशान किया ही जा रहा है। उनके चर्च व स्कूलों पर कब्जे करके भाषा, शिक्षा और पूजा के अधिकारों से भी उन्हें वंचित करने की कोशिश हो रही है। लड़कियो को जबरन मुसलमान बनाने की घटनाएं भी बढ़ी हैं।

पाकिस्तान की क्रिश्चियन नेशनल पार्टी के एक सदस्य के अनुसार १९४७ से ही मुसलमान यहां चर्च की सम्पत्तिया जबरन अपने कब्जे में ले रहे हैं। यह काम क्योंकि सर्वोच्च स्तर पर हो रहा है इसलिये निचले स्तर पर कहीं-कहीं हालत अराजकता की स्थिति तक पहुंच जाती है। उसी का नतीजा है कि गुस्ताख-ए-रसूल के तहत आज सबसे ज्यादा मामले इसाइयों के खिलाफ दर्ज कराये जा रहे हैं। इनके मूल में ज्यादातर संपत्ति का झगड़ा ही होता है। उन्होंने बताया कि रंगमहल मिशन हाई स्कूल एंड क्रिश्चियन कालेज का प्रबन्ध १९७२ में पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के नेता जुल्फिकार अली भुट्टो ने अपने हाथ में ले लिया था। १९८० में मार्शल ला शासक जनरल जियाउल हक ने यह सारी सम्पत्ति अपने कब्जे में ले ली। कालेज अधिकारियों ने इसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया। सुप्रीम कोर्ट ने १९८७ में आदेश दिया कि सम्पत्ति चर्च को वापिस करा दी जाए। पर आज तक उसे लौटाया नहीं गया। गैर सरकारी स्तर पर काम कर रहे मानवाधिकार आयोग की रपट के मुताबिक १९९२ में लाहौर में सेंट जोंस हास्टल और डान बोस्को चर्च पर कब्जा कर लिया गया।

पार्टी प्रवक्ता के मुताबिक उन्हें अपने स्कूलों में बच्चों को शिक्षा उर्दू में देनी पड़ती है। सरकारी स्कूलों में उन्हें जबरन इस्लाम धर्म पढ़ाया जाता है। बच्चे क्योंकि ठीक से समझ नहीं पाते इसलिए फेल भी काफी बड़ी संख्या में होते हैं। इसका नतीजा यह है कि सरकारी नौकरियों से वे बिल्कुल बाहर हो गये हैं। प्राइवेट संस्थानों में भी उन्हें अच्छी नौकरियां नहीं मिल पाती। ईसाई निम्न दर्जे के काम करने पर मजबूर हैं।

ईसाइयों के जबरन धर्म परिवर्तन कराने की घटनाएं भी बढ़ी हैं। आयोग की एक रपट के मुताबिक एक अदालत के इस फैसले के बाद कि अगर कोई विवाहित धर्म परिवर्तन कर इसलाम में आता है तो उसकी पहली शादी अपने आप खारिज हो जाएगी इसाई लड़कियों का मुसलमान या तो धर्म परिवर्तन करा रहे हैं या फिर उन्हें परिवर्तन के लिए फुसलाया जाता है। इसके अलावा भी क्योंकि गैर-मुसलमानो की हालत देश में आये दिन बदतर होती जा रही है, बड़ी संख्या में ईसाई धर्म परिवर्तन कर इस्लाम मे आ रहे हैं। इसाई औरतो को बहुसंख्यक वर्ग एक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। लाहौर में नया बगा थाने में पुलिस ने दो इसाई लड़कियो को जबरन पकड़ा। वह चाहती थी कि वे उसकी ओर से लगाये जा रहे इस आरोप को मंजूर कर लें कि उनके भाई ने बैल चुराए हैं। मना कर देने पर उन्हें निर्वस्त्र कर उनसे जबरन डांस कराया गया। (यहां यह बता देना ठीक ही होगा कि पाकिस्तान में कानूनी तौर पर औरतों को सार्वजनिक स्थानों पर नाचने की मनाही है)।

नजीमाबाद में सिराजगंज कालोनी में भी इसी तरह एक महिला को अपमानित किया गया था। गवाही सम्बन्धी कानून भी इसाईयो से भेद करता है। किसी भी मामले में ईसाई को गवाही में दो लोगों को खड़ा करना पड़ता है। क्योंकि एक इसाई की गवाही आधी मानी जाती है।

प्रशासन भी इसाइयों से भेदभाव करने में पीछे नहीं है। आयोग के अनुसार इसाईयों के इलाकों मे आधारभूत सहूलियतें भी मुहैया नही करवाई जाती। देखा गया है कि एक ही इलाके में जहां मुसलमान रहते हैं वहां पानी, बिजली, पानी निकासी आदि सभी सुविधाएं हैं पर उसके साथ लगे मोहल्ले में ये सुविधाएं नहीं हैं। लाहौर की बहार कालोनी इसका एक उदाहरण है। पाकिस्तान क्रिश्चियन नेशनल पार्टी के एक उच्च पदाधिकारी के अनुसार पार्टी ने इस बार पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ा था। हालांकि अल्पसंख्यक होने के कारण उनका अलग मताधिकार है। पार्टी इसका हमेशा विरोध करती रही है। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में अल्पसंख्यकों को भी बराबर का अधिकार देने का वायदा किया है। अब जबकि वह सत्ता में है हमारी पूरी कोशिश रहेगी कि कम से कम प्रशासनिक और राजनैतिक स्तर पर हमसे भेदभाव न हो। हमारी भाषा और संस्कृति को हमें सुरक्षित रखने दिया जाए।

वे कहते हैं—'हम लोग यही जन्मे, पले और बड़े हुए हैं। हमारी राष्ट्रीयता पाकिस्तानी है। मगर अफसोस है कि बार बार सड़कों पर आकर हमें यह बताना पड़ता है कि हम पाकिस्तानी हैं। यह दुर्भाग्यजनक है।'

(हिन्दुस्तान १८-१२ ९३ से साभार)

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार २५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—सम्पादक

स्वामी श्रद्धानन्द

(पृष्ट ६ का शेष)

तन, मन, धन से उद्धार करो। तब फिर से एक राष्ट्र का निर्माण होगा और पुनः वृद्ध भारत स्वस्थावस्था को प्राप्त होकर देश-देशान्तरों के तप्त हृदयों को अपनी श्रद्धामयी शिक्षा से शान्त करेगा।'

इस भांति हिन्दी भाषा के प्रचार व प्रसार में भी स्वामी श्रद्धानन्द की सेवायें अविस्मरणीय रहेगी। उन्होंने प्राचीन आर्ष शिक्षा पद्धति के पुनरुद्धार, स्त्री शिक्षा के प्रसार एवं हिन्दी के गौरव को प्रतिष्ठित करने के लिए जो पुरुषार्थ किया, वह भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में आज भी फलीभूत हो रहा है। भारत की शिक्षा प्रणाली में पुरातन वैदिक आदर्शों का प्रवेश कराना तथा उसे नैतिकता, चरित्र एवं धर्म से समन्वित कराना स्वामी श्रद्धानन्द का एक महान ऐतिहासिक कार्य था। जो लोग उनका एक आर्य समाज के नेता के रूप में मूल्यांकन नहीं करते वे भी यह स्वीकार करते हैं कि भारत की शिक्षा पद्धति में नैतिक मूल्यों का समावेश उन्हीं के प्रयास से सम्भव हुआ। विगत अनेक शताब्दियां बीत जाने पर भी गुरुकुल कांगड़ी के अनुरूप कोई अन्य शिक्षण संस्था आर्ष वैदिक शिक्षा व्यवस्था को साकार करती दिखाई नहीं देती। यद्यपि यह भी सत्य है कि कालान्तर में वह गुरुकुल भी उस स्थिति में नहीं रहा, जैसी कि स्वामी श्रद्धानन्द जी भावना थी। कारण यह है कि आज देश में वैसी श्रद्धा और त्याग भावना रखने वाले व्यक्तियों का सर्वथा अभाव है जिसकी कि स्वामी जी साकार प्रतिमा थे।

अतः निष्कर्षरूप में कहा जा सकता है कि स्वामी श्रद्धानन्द ने देश में मैकाले की शिक्षा पद्धति की त्रुटियों और अभिशापों के निराकरणार्थ तथा मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली अपनी संस्कृति, अपने धर्म, अपनी राष्ट्रीयता, आदर्शों व परम्पराओं के प्रति प्रेम उत्पन्न करने वाली, ब्रह्मचर्य-आश्रित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धार का जो संकल्प किया, उसे मूर्त रूप देने में वे प्राणपण से लगे रहे। अतः आज उनके बलिदान दिवस पर उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करने का सबसे सार्थक एवं समीचीन रूप यही होगा कि हम उनके द्वारा आरम्भ किए गये कार्यों को उन्हीं की भांति निष्ठा, श्रद्धा एवं साहस से पूर्ण करें। परमात्मा से प्रार्थना है कि हम सबमें सच्ची श्रद्धा का उदय हो और उस श्रद्धा के द्वारा हम 'आनन्द' के भागी बनें, तभी स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान सफल हो सकेगा।

वेदों में अद्भुत विज्ञान

– विद्याभास्कर सच्चिदानन्द शास्त्री, एम० ए०

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के नियमों में वेद को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक कहा है, और 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में लिखा है कि ईश्वर से लेकर तृणपर्यन्त जितने पदार्थ हैं, उन सबका वर्णन वेद में है। श्री शंकराचार्य जी ने वेदान्त दर्शन का भाष्य करते हुए 'शास्त्रयोनित्वात्'—इस सूत्र के भाष्य में वेद को सब ज्ञान विज्ञानों का स्रोत बतलाया है। इनके अतिरिक्त विदेशी विद्वानों ने भी कई स्थानों पर मुक्तकण्ठ से लिखा है कि अब तक जितना विज्ञान दृष्टिगोचर है वह सब वेदों में ही पाया हुआ है। स्वामी दयानन्द ने इस सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है—

"वेद के विषय चार है। विज्ञान काण्ड, कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड और ज्ञान काण्ड। इन सब में से विज्ञान काण्ड मुख्य है क्योंकि उसमें परमेश्वर से लेकर तृण तक सब पदार्थों का साक्षात बोध हो जाता है।"

वेदों के विषय में श्री योगी अरविन्द ने महर्षि दयानन्द से भी बढ़ कर अपनी सम्मति दी है। वे लिखते हैं कि—

"वेदों में केवल धर्म ही नहीं, विज्ञान भी है। दयानन्द के इस विचार में चौंकने की कोई बात नहीं है। मेरा विचार तो यह है कि वेदों में विज्ञान की ऐसी बातें भी हैं जिनका पता आज के वैज्ञानिकों को नहीं चला है। इस दृष्टि से देखने पर तो यह दीखता है कि दयानन्द ने वेदों में निहित ज्ञान के विषय में अत्युक्ति नहीं, अपितु अल्पोक्ति से काम लिया है।"

वेदों में बहुत अद्भुत विज्ञानों का वर्णन है। जो लोग प्राचीन भारत को असभ्य और जंगली समझते थे, वे वेदों में अद्भुत विज्ञानों को देख कर आश्चर्यान्वित हो जाते हैं।

आज कल व्यापार बहुत बढ़ा हुआ है व्यापार के नये-नये ढंग और साधन निकल आये हैं। समुद्र के मार्ग से भी व्यापार का क्षेत्र बहुत विस्तृत हो चुका है। परन्तु अभी तक हवाई जहाज द्वारा आकाश के मार्ग से व्यापार का कार्य प्रचलित नहीं हुआ। वेदों को गडरियों का गीत कहने वाले यह बात आश्चर्य से सुनेंगे कि आकाश के मार्ग से व्यापार का वर्णन वेदों में बहुत उत्तम रूप में मिलता है। अथर्ववेद में मन्त्र है कि—

ये पन्थानो बहवो देवयाना, अन्तराद्यावापृथिवी संचरन्ति।
ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि॥

अर्थात 'आकाश और पृथ्वी के बीच में जो बहुत से मार्ग खूब चलते हैं, वे मुझे दूध और घृत से तृप्त करें, जिससे कि मैं वस्तुयें खरीद कर धन कमा कर लाऊं'। इस वर्णन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्राचीन विज्ञान से आकाश तथा पृथ्वी के मध्य के मार्ग खूब चलते रह सकते है।

आज कल इतना तो होता है कि व्यापारी लोग हवाई जहाज द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक चले जायें। परन्तु इस मन्त्र मे दो बातें तो बहुत ही आश्चर्य में डालने वाली है। एक तो यह कि पृथ्वी और आकाश के मध्य मार्ग बने हुए हैं। हवाई जहाज के चालक विद्युद्योतक यन्त्र द्वारा ही आजकल मार्ग का ज्ञान करते हैं और उसी के आधार पर यात्रा करते हैं। दूसरी बात आश्चर्य में डालने वाली यह है कि उन मार्गों मे घी और दूध का प्रबन्ध रहा करता था ताकि व्यापारी मार्ग में अपनी भूख को मिटा सकें।

इसी प्रकार के अनेक विज्ञान वेदो में भरे पड़े हैं जिनका ज्ञान वैज्ञानिकों को आज तक भी नहीं है।

सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व की दशा से लेकर सृष्टि के आविर्भाव तक की दशा का शब्दचित्र वेदों में है। तेंतीस देवताओं की गति विधि की बात इनमें है, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, तारागण की बात इनमें है। पंच महाभूत, पंच तन्मात्रा आदि का विवरण इनमें है। शरीर विज्ञान, मनोविज्ञान प्राणविज्ञान आत्म-विज्ञान आदि की बातें वेदों में है। वेदों में गणित विद्या, भूकम्प, जलप्लावन विद्युत्स्फोट, नीति विद्या, रसायन शिल्प, धनुर्विद्या, ज्योतिष आदि सब प्रकार की विद्याओं का वर्णन है। यही कहना कठिन है कि वेदों मे मूलरूप से क्या नहीं है।

जिनको पहले वेदों में श्रद्धा नहीं थी और जो इन्हें कल्पित गीत बताया करते थे, वे पाश्चात्य विद्वान भी अब यह मानने लगे है कि प्राचीन भारत खूब उन्नत अवस्था में था, और इसी ने यूरोप में अनेक प्रकार की विद्या, कला, और अनेक वस्तुओं का प्रचार किया था। अब वे पाश्चात्य विद्वान भी यह घोषणा करने लगे हैं कि पश्चिमी संसार को जिन बातों पर अभिमान है वे वस्तुतः भारत से ही यहां आई थी। वे यह भी लिखते है कि विविध प्रकार के फल-फूल, वृक्ष और पौधे जो इस समय यूरोप मे उत्पन्न होते हैं, वे भारत ही से लाकर यहां लगाये गये हैं। इनके अतिरिक्त मलमल, रेशम, टीन, लोहे, शीशे तथा घोड़ो का प्रचार भी यूरोप मे भारत ही के द्वारा हुआ था। केवल यही नही, ज्योतिष, वैद्यक, गणित, चित्रकला और कानून भी भारतवासियो ने ही यूरोप वालों को सिखाए थे।

भारत मे भी ये सब विद्यायें तभी थीं जब यहां वेदों का खूब प्रचार था। अब तो समय के फेर से वेदो को समझने वाले ही भारत में नहीं रहे हैं। इन विद्याओं का प्रचार भी अब यहां कैसे रह सकता है। यद्यपि विदेशियों ने विज्ञान मे इस समय उन्नति कर ली है तथापि यह बात तो वे स्वयं ही सिद्ध करते हैं कि यूरोप में विद्याएं प्रारम्भ में भारत सेही आई थीं। यदि वेदो का प्रचार अब फिर हो जाये और परमेश्वर की कृपा से देश मे पहला ही समय आ जाये तो वेदो के सब अद्भुत विज्ञान फिर से उन्नत हो सकेंगे। कुछ अद्भुत विज्ञानो का दिग्दर्शन यहां किया जाता है।

सूर्य की आकर्षण शक्ति और पृथ्वी का धारण

पौराणिक कथाओं मे कहा गया है कि पृथ्वी एक बैल के सींगों पर खड़ी है। कथानक के रचयिता ने तो एक सारगर्भित कथा की रचना की, परन्तु हमारे विद्वान बिना किसी प्रश्नोत्तर के वैसे ही मानते रहे। यहां तक कि यजुर्वेद के भाष्यकर्ताओं ने 'वृषभो दाधार पृथ्वीम्' इसका अर्थ 'बैल पृथ्वी को धारता है' इस प्रकार किया, परन्तु महर्षि यास्क के बतलाये 'वृषभ' शब्द के अर्थ को उन्होंने हृदयंगम नहीं किया। महर्षि यास्क ने लिखा है—वृषभः कस्मात्—वर्षयिता अपाम्' अर्थात् वृषभ शब्द का अर्थ है—पानी बरसाने वाला। क्या बैल पानी बरसाता है।। पानी तो सूर्य द्वारा बरसाया जाता है। एक स्थान पर यजुर्वेद में मिलता है—'सहस्रशृंगो वृषभो उद्चीत' अर्थात हजारों सींगों वाला बैल निकला यहां शृंग शब्द का अर्थ सूर्य की किरणें हैं। महर्षि यास्क शृंग शब्द का अर्थ करते हुए लिखते हैं—'शृंगः कस्मतात शृंणातेः'। अर्थात शृंग वह है जो विश्लेषण करे। सूर्य की किरणें अपने ताप से समस्त पदार्थों को अलग-अलग करती है। अब सहस्रशृंगो वृषभो उदचीत' का अर्थ यह हुआ कि 'सहस्रों किरणों वाला सूर्य चढ़ा'। वेद में आगे लिखा है कि "वृषभो दाधार पृथ्वीम" अर्थात सूर्य ने पृथ्वी को धारण किया है'। दाधार शब्द 'धृञ' धातु से लिट लकार मे बना हुआ है, इसका अर्थ है धारण और पोषण। सूर्य भूमण्डल का धारण अवलम्बन करता है और अपनी उष्णता से प्राणि जगत तथा वनस्पति जगत का पोषण करता है।

इस प्रकार वेद ने हमें यह विज्ञान दिया कि हमारा भूमण्डल सूर्य के आश्रित है, और उसी के आकर्षण से स्थित है।

तीन अग्नियां

वेद विज्ञान के उच्चतम ग्रन्थ हैं। इनमे विज्ञान मूल रूप में संक्षिप्त एवं इंगित रूप में बतलाये गये हैं। वैदिक विज्ञान तीन अग्नियों पर अवलम्बित है। (१) पार्थिव अग्नि (FIRE), (२) अन्तरिक्षाग्नि (ELECTRICITY) (३) द्युलोक की अग्नि (SUN)। ऋग्वेद में पार्थिव अग्नि के द्वारा विज्ञान को दर्शाया गया है। ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र इस प्रकर है—

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम। होतारं रत्नधातमम्॥

इस मन्त्र में पार्थिव अग्नि के कई विशेषण दिए गये हैं। पुरोहितम = हमारे सामने विद्यमान। ऋत्विजम = ऋतुओं को बनाने वाला। रत्नधातमम = रत्न, हीरे आदि को पुष्ट करने वाला।

वास्तव में यह अग्नि प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है। लता, वृक्ष, पौधे इसी के कारण बढ़ते और पुष्ट होते हैं। समस्त वस्तुयें अग्नि शक्ति की न्यूनाधिकता के कारण परिपुष्ट होती हैं। रत्नों का तेजोमय होना भी इसी पर अवलम्बित है। ये विज्ञान के सिद्धान्त हैं।

यजुर्वेद में अग्नि स्तुति का एक मन्त्र है जिसमें इसी सिद्धान्त की सम्पुष्टि की गई है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द का अवदान (२)

डा० (श्रीमती) शशिप्रभा कुमार

मनु का कथन है—

"स्वयमाचरति शिष्यानाचारे स्थापयत्यपि।
आचिनोति हि शास्त्रार्थं माचार्यस्तेन कथ्यते।"

स्वामी श्रद्धानन्द मानो इन वैदिक आदर्शों के मूर्तिमान् आचार्य थे। उन्होंने स्वयं एक बार अपने भाषण में कहा था कि –

"यदि जाति को स्वतन्त्र देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्ति बनकर अपनी सन्तान के सदाचार की बुनियाद रख दो। जब सदाचारी ब्रह्मचारी और शिक्षक हों और राष्ट्रीय हो शिक्षा पद्धति तभी राष्ट्र की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले नौजवान निकलेंगे, नहीं तो इस प्रकार आपकी सन्तान विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलाम बनी रहेगी।"

इस भांति, गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके स्वामी श्रद्धानन्द ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा दी, इसमें कोई सन्देह नहीं। वस्तुतः गुरुकुल स्वामी श्रद्धानन्द के शिक्षा विषयक आदर्शों को साकार करने वाली एक महत्त्वपूर्ण कर्मशाला या प्रयोगशाला ही बन गई थी। इसीलिए पं० सत्यकेतु विद्यालंकार ने "आर्य समाज का इतिहास" में सत्य ही लिखा है कि—

"गुरुकुल का स्वरूप एक शिक्षण संस्था मात्र का न रहकर शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन व मौलिक आन्दोलन का हो गया था।"

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी स्वीकार किया था कि "आर्य समाज के कार्य का सर्वोत्तम परिणाम गुरुकुल की स्थापना है। यह सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय संस्था है जिसके शासन और प्रबन्ध सब स्वायत्त हैं।" ब्रह्मचारी जगदीश विद्यार्थी के शब्दों में—"गुरुकुल महात्मा मुन्शीराम जी के जीवन का इतना महत्त्वपूर्ण कार्य है कि उनके सब कामों के इतिहास के पृष्ठों से मिट जाने पर भी नालन्दा और तक्षशिला के विश्वविद्यालयों के समान सदा स्मरण किया जाता रहेगा।"

स्त्री शिक्षा का प्रचार

आर्य समाज और उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द की ही भांति स्वामी श्रद्धानन्द ने भी स्त्री शिक्षा के प्रसार में अभूतपूर्व कार्य किया है। आधुनिक परिपेक्ष्य में इस कार्य का समुचित मूल्यांकन करना कुछ कठिन है किन्तु उस समय तो सामान्य जनता में यह विश्वास था कि स्त्रियों को शिक्षा दी ही नहीं जानी चाहिए। अतः जो प्रबुद्ध जन अपनी पुत्रियों को पढ़ाना भी चाहते थे उन्हें ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित विद्यालयों में ही अपनी कन्याओं को भेजना पड़ता था। महात्मा मुन्शीराम की पुत्री वेदकुमारी को भी ऐसी ही एक पाठशाला में भर्ती कराया गया था किन्तु जब एक दिन उसके मुख से उन्होंने ईसा संकीर्तन सुना तभी यह निश्चय कर लिया कि आर्य संस्कृति की शिक्षा देने वाली कन्या पाठशालायें खोलनी चाहियें, जिससे न केवल भारत की नारी जाति का अपितु भावी संतति का भी कल्याण सुनिश्चित हो सके। इसी शुभ संकल्प की परिणति स्वरूप जालन्धर में कन्या विद्यालय खोला गया जो अपने ढंग की पहली शिक्षण संस्था थी। इसके विकास एवं संचालन का प्रमुख दायित्व लाला देवराज ने निभाया, किन्तु प्रेरणा एवं परामर्श महात्मा मुंशीराम के ही थे। आरम्भ में जब कन्या विद्यालय खोला गया, तब लोग अपनी कन्याओं को वहां प्रवेश कराने से भी डरते थे। उस समय महात्मा मुंशीराम और लाला देवराज घर-घर जाकर लोगों को समझाते थे और उन्हें अपनी कन्याओं को शिक्षित करने की प्रेरणा देते थे। महात्मा मुंशीराम ने तो स्वयं अपनी अशिक्षिता धर्म पत्नी को पढ़ाने का भी प्रयास किया और अपनी दोनों पुत्रियों को तो कन्या महाविद्यालय में भर्ती करा ही दिया। गुरुकुल कांगड़ी के अनुकरण पर देश के भिन्न-भिन्न भागों में अनेक गुरुकुल तो स्थापित हुए ही, कन्याओं के लिए भी देहरादून में कांगड़ी की शाखा रूप में ही कन्या गुरुकुल की स्थापना हुई, जो आज भी स्त्री शिक्षा के प्रचार में अपना अमूल्य अवदान दे रहा है।

इस भांति, स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं इस वैदिक आदर्श के अनुरूप ही था—

कन्याप्येवं लालनीया शिक्षणीयां च यत्नतः।

प्रसिद्ध अमेरिकी दार्शनिक इमर्सन ने ठीक ही कहा था कि— 'संस्थायें व्यक्तियों की छाया मात्र होती है।' इस दृष्टि से कन्या महाविद्यालय जालन्धर (जो गुरुकुल की स्थापना से एक दशक पूर्व ही खोला गया था) स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में एक साहसिक व क्रान्तिकारी कदम तो था ही, स्वामी श्रद्धानन्द को महान शिक्षा शास्त्री एवं स्त्री जाति के उद्धारक के रूप में भी अविस्मरणीय बना गया है। यह उनकी दूरदर्शी व्यापक दृष्टि की चरम सफलता ही थी जिससे प्रेरित होकर लाला देवराज ने अपनी डायरी में लिखा था कि—

',समाज अब तक बहुत तरक्की कर जाता, अगर हमारी स्त्रियां हमारे साथ होतीं। स्त्रियों के अज्ञान से आर्य धर्म और आर्य समाज को बहुत हानि हो रही है। मैं जड़ को सींच रहा हूं। मैं घरों को स्वर्ग बनाने की कोशिश कर रहा हूं। मायें जब आर्य बन जायेंगी, तब पुत्र क्यों आर्य न बनेंगे? स्त्री शिक्षा के समर्थन में इससे प्रबल तर्क क्या दिया जा सकता है। कहना न होगा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने स्त्री शिक्षा के प्रचार के लिए जो प्रयास किये, उनका सुफल आज हम आर्य ललनायें भोग रही हैं।

आर्य भाषा हिन्दी का प्रचार

महर्षि दयानन्द का आर्य भाषानुराग एवं आर्य समाज द्वारा की गई हिन्दी सेवा तो सर्वविदित ही है। उस समय के उर्दू प्रधान पंजाब में हिन्दी के प्रचार का श्रेय आर्यसमाज को ही है। स्वामी श्रद्धानन्द भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं रहे। उन्होंने अपना 'सद्धर्म प्रचारक' पत्र पहले उर्दू में ही निकालना आरम्भ किया था, किन्तु ज्योंहि उन्होंने अनुभव किया कि राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी को उसका समुचित स्थान दिलाने के लिए सभी स्तरों पर हिन्दी के प्रचार और प्रयोग की आवश्यकता है तो तत्काल उसे हिन्दी में निकालना शुरू कर दिया। वैसे वे उर्दू, हिन्दी तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं में समान अधिकार से लिखते थे फिर भी अपनी अधिकांश रचनायें उन्होंने हिन्दी में ही लिखी हैं। गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा का माध्यम हिन्दी को बना कर मानों उन्होंने यह घोषित कर दिया था कि जब तक प्राथमिक और उच्च कक्षाओं की पढ़ाई के लिए स्वभाषा को प्रयुक्त नहीं किया जायेगा, तब तक छात्रों को विषयों का विशद ज्ञान सुगमता से नहीं हो सकेगा। उन्होंने गुरुकुल के विद्वान आचार्यों को विज्ञान जैसे विषयों की उच्च कोटि की पाठ्य पुस्तकें हिन्दी में लिखने की प्रेरणा दी और उन ग्रन्थों को गुरुकुल से ही प्रकाशित कराया जो पुनः उनके प्रबल हिन्दी प्रेम को प्रकट करता है।

स्वामी श्रद्धानन्द की हिन्दी सेवा को उस समय राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति एवं सम्मान प्राप्त हुआ जब वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन (भागलपुर) में अध्यक्ष मनोनीत किए गये। इसी सम्मेलन में उन्होंने हिन्दी को 'मातृ भाषा' कह कर उसके प्रति अपनी आदर भावना प्रकट की थी। उनका विचार था कि भारत को मातृ भूमि मानने वाले सभी भारतीयों को हिन्दी को अपनी मातृ भाषा मानना चाहिए। हिन्दी के प्रति उनकी भावना उनके निम्न वाक्यों से व्यक्त होती है—

इस अभागे देश के अतिरिक्त सभ्य संसार में और कोई देश भी है जहां शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा के अतिरिक्त कोई विदेशी भाषा हो? जब हमारे बालक पढ़ते अंग्रेजी में, सोचते अंग्रेजी में, भक्षित पदार्थ विद्या सीखते विदेशी भाषा में, तो इसमें मौलिक विचार की शक्ति कैसे जीवित रह सकती है? यदि किसी आंग्ल विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम फ्रेंच भाषा को करने या किसी जर्मन विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी करने का प्रस्ताव हो तो उसको पागलपन समझा जायेगा परन्तु भारतवर्ष एक विचित्र देश है जहां हिन्दू बालकों के लिए शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनाने वालों को देश हितैषी और बुद्धिमान समझा जाता है।"

उठो ऋषि सन्तान! बहुत सो चुके। देवनागरी लिपि का सारे देश में प्रचार करो आर्य भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाओ और मातृ भाषा का

(शेष पृष्ठ ८ पर)

स्वास्थ्य चर्चा :

बहुत लाभदायक है बथुए का सेवन

शीतकाल आरम्भ होने के साथ-साथ सब्जी की दुकानो पर बथुए का आगमन होने लगता है। बथुए की स्वादिष्ट सब्जी भुजिया रायता, तथा पराठे इत्यादि बनाये जाते हैं। बथुए की सब्जी सारे भारत में प्रसिद्ध है। जैसे-जैसे सर्दियां बढ़ती हैं, बथुए की भरमार होती जाती है। हमारे देश में बथुआ अति प्राचीन समय से उपलब्ध होता आ रहा है। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता इत्यादि आयुर्वेदीय ग्रन्थो मे भी बथुए का उल्लेख मिलता है।

बथुए का पौधा भारत के अनेक प्रान्तों मे नैसर्गिक रूप मे उत्पन्न होता है। इस पौधे का वानस्पतिक नाम 'चेनोपोडियम एल्बम है।

बथुए में ढेरो औषधीय गुण भी होते हैं। यही कारण है कि अति प्राचीन काल से हमारी स्वदेशी चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद में, विभिन्न रोगो की चिकित्सा के लिए बथुए का उपयोग किया जाता है। हकीमों के अनुसार बथुआ ठंडा तथा खुश्क होता है। यह शरीर में कोमलता और सरदी उत्पन्न करता है। यह यकृत विकारो को दूर करता है। इसके सेवन से नवीन रक्त का निर्माण प्रचुरता से होता है। महिलाओ तथा एनीमिया से पीडितो के लिए इसका सेवन वरदान स्वरूप सिद्ध होता। इसके कुछ दिनो के सेवन से ही कब्ज दूर होकर पेट मुलायम बन जाता है। यह ठण्डा होने के कारण पीलिया को भी दूर करता है। पित्त प्रकृति वालो के लिए यह विशेष रूप से लाभदायक होता है। पित्त के कारण उत्पन्न हुई एसिडिटी, विभिन्न चर्म रोग, सर्व शरीरगत दाह इत्यादि को बथुआ दूर करता है।

बथुए के पत्ते को पानी मे उबाल कर तथा उस पानी मे शक्कर मिला कर पीने से दस्त साफ होता है तथा गुरदे की पथरी टूट जाती है। मलेरिया टाइफाइड इत्यादि के कारण बढ़ी हुई तिल्ली भी इस प्रयोग से सामान्य अवस्था में आ जाती है। रक्त के विभिन्न उपद्रव, पेट के कीड़े बवासीर तथा सन्निपात मे भी यह मुफीद है। इसके पत्तो का उबाला हुआ पानी पीने से रुका हुआ पेशाब खुल कर आने लगता है। इसका काढ़ा रेशमी कपड़ों के धब्बे मिटाने के लिए भी उपयोगी होता है। बथुआ दिल को ताकत देता है। बथुए के बीज भी चिकित्सोपयोगी गुण धर्म वाले होते हैं। इनको नमक और शहद के साथ लेने से आमाशय की सफाई होकर दूषित पित्त शरीर से बाहर निकल जाता है। यकृत में गांठें पड़ने के कारण होने वाले पीलिया के रोगी को सात माशे बथुए के बीजो को इक्कीस दिन तक नियमित लेने से गांठें बिखर जाती हैं तथा पीलिया समाप्त हो जाता है। बथुए का साग अर्श के रोगियो के लिए परम हितकारक होता है। बथुए का ताजा रस निकाल कर उसमे नमक मिला कर पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। बथुए के डेढ़ तोला बीजों को आधा सेर पानी मे औटा कर, जब आधा पानी शेष बच जाए, तब उसे छान कर पिलाने से शिशु प्रसूता स्त्री को कष्ट मुक्ति मिल जाती है।

आयुर्वेदाचार्यों की यह मान्यता है कि बथुआ मधुर ठंडा, क्षार युक्त तथा विपाक मे कटु कृमिघ्न अग्निप्रदीपक, रुचिकारक शुक्रवर्धक, बलप्रद, प्लीहा-रोग रक्तपित्त, कृमि इत्यादि रोगो को दूर करने में समर्थ होता है। यह शरीरगत विषम अवस्था को प्राप्त हो रहे तीनो दोषो को सम अवस्था में लाता है। प्रवाहिका, सूखी खांसी, स्तन स्थानिक दाह जीर्ण वमन इत्यादि रोगों से पीड़ितो को नियमित रूप से बथुए का साग सेवन करते रहना चाहिए।

चूंकि बथुए में विटामिन ए पर्याप्त मात्रा में उपस्थित होता है अत इस के नियमित सेवन से नेत्र ज्योति बढ़ती है तथा रतौंधी से भी लाभ होता है। बथुए को बुद्धिवर्धक भी माना जाता है।

बथुए का सेवन सलाद के अन्य द्रव्यो के साथ मिला कर, भोजन के साथ किया जा सकता है। बथुए के सेवन से भूख खुलती है तथा शरीर की समस्त धातुओं का पोषण होता है। बथुए मे काफी मात्रा मे उपस्थित जीवन पोषक तत्वों के कारण नियमित सेवन करने वाले कुपोषण से पीड़ित हो ही नहीं सकते। यह स्वयं में पूर्ण सतुलित आहार द्रव्य है। यह बड़े खेद का विषय है कि ग्रामवासियो की इस अनमोल वनौषधि के इतनी सुलभ होते हुए भी हमारी ग्रामीण महिलाए इसका सेवन नहीं करती हैं तथा एनीमिया, पीलिया इत्यादि रोगो से ग्रस्त रहती हैं। बथुए के रस मे मिश्री मिला कर पिलाने से पेशाब की रुकावट दूर होती है।

वैद्य अनुराग विजय वर्गीय

सत्ता संघर्ष और आर्य समाज

धर्म और संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए देश की चारों दिशाओ में शंकराचार्य ने चार मठो की स्थापना की थी। तत्पश्चात अन्य आचार्यों ने भी अपने विचारो का प्रचार स्थाई रूप से होता रहे इसके लिए मठो की स्थापना की। उसके प्रधानाधिकारी को मठाधीश कहते हैं जिसकी नियुक्ति गुरु अपने उत्तराधिकारी के रूप में करता है। जो आजीवन उस संस्था का स्वामी रहता है और धार्मिक कार्यों को उस मठ के द्वारा सचालित करता है। इसमें एकाधिकारवाद, अपने अधिकारो का दुरुपयोग, स्वच्छन्दता चारित्रिक भ्रष्टतादि अनेक दोषो की सम्भावना रहती है, क्योंकि एक बार उत्तराधिकारी की नियुक्ति होने पर कोई उसे पदच्युत नहीं कर पाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ मे आर्य समाज की स्थापना की तथा इस संस्था मे स्वच्छन्दता और एकाधिकारवाद चारित्रिक भ्रष्टाचारादि दोष न आने पावे इसके लिए संस्था के अधिकारियो की नियुक्ति प्रजातन्त्रात्मक शैली से आर्य सभासदो द्वारा चुनाव के माध्यम से हो यह व्यवस्था महर्षि दयानन्द ने की। यदि कोई व्यक्ति अपने अधिकारो का दुरुपयोग करता है और अपने कर्तव्यों का ठीक से पालन नहीं करता है तो आर्य सभासद उसे चुनाव के द्वारा उस पद से हटा देते हैं। ये चुनाव प्रतिवर्ष तथा कुछ संस्थाओं में तीन वर्ष में होते हैं। आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के पदाधिकारी बनाने की भी यही प्रक्रिया है

स्वामी अग्निवेश और इन्द्रवेश तथा इनके साथी इसी चुनाव प्रक्रिया के माध्यम से एक बार 'आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के पदाधिकारी और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि बने थे। अत्यधिक महत्वाकांक्षा के कारण इन्होंने अपने पद पर रह कर अपने अधिकारों का दुरुपयोग किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को हानि पहुचाई जिसके परिणाम स्वरूप अगले चुनावों में पदाधिकारी नहीं बन सके, तो पदलोलुपता के वशीभूत इन लोगो ने एक अलग से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब बना कर उसके अधिकारी बने रहे और सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष करते रहे। इसी प्रकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी चुनाव प्रक्रिया के द्वारा नहीं बन सके तो अपने आप एक भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा बना डाली और उसके अधिकारियो की नियुक्ति कर दी। वे सारे व्यक्ति जो चुनाव प्रक्रिया से अधिकारी नहीं बन पाते हैं या जिन्हे आर्य सभासद योग्य नहीं समझते हैं वे सभी इन्द्रवेश अग्निवेश के साथ मिल गये, एक संस्था बना कर उसके स्वयंभू अधिकारी बन गये। आर्य समाज के सिद्धान्तो के विरोधी लोग कुछ स्वार्थी व्यक्ति को पत्रकारिता या राजनीति या अन्य संस्थाओ से जुड़े हुए हैं। ये लोग स्वामी अग्निवेशादि के द्वारा किए जाने वाले उद्दण्डता एवं अनुशासन हीनतात्मक कार्यों को अधिक महत्व दे रहे हैं और उसे उचित बना कर अपने को सन्तुष्ट कर रहे हैं। सैद्धान्तिक विचारों से आर्य समाज के संघर्ष में असफल व्यक्ति अपनी मानसिक व्यथा को ऐसे उच्छृंखलता भरे कार्यों को ठीक बता कर शान्त कर रहे हैं।

जहा तक आर्य समाज की प्रासंगिकता का प्रश्न है यह आज भी वैसी ही है जैसी पहले थी। धर्म के नाम पर अन्ध विश्वास पाखंड आज भी बहुत फैल रहा है। जातिवाद सम्प्रदाय और भाषा के नाम पर आज भी मनुष्य को एक दूसरे से दूर किया जा रहा है जिसे आर्य समाज ही एक धर्म एक जाति एक भाषा के दृष्टिकोण के अनुसार मनुष्य समाज और राष्ट्र को सुरक्षित रख सकता है।

कैप्टन देवरत्न आर्य

उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

वेदों मे विज्ञान

(पृष्ठ ५ का शेष)

गर्भोऽस्योषधीना, गर्भो वनस्पतीनाम ।
गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्नि गर्भोऽस्यापसि ॥ (यजु० १२-३७)

हे अग्नि ! तुम औषधियों के गर्भ में हो, वनस्पतियो के गर्भ में हो, इत्यादि ।

वनस्पति विज्ञान

विज्ञान का यह सिद्धान्त है कि सूर्य भूमि के जल को ऊपर खींचता है। वृक्ष तथा लताओ मे जो जल सींचा जाता है, सूर्य उसे अपनी ओर आकर्षित करता है। हमारी भौतिक अग्नि भी उसी जल के साथ ऊपर की ओर सरकती है। ज्यों-ज्यो अधिक रस खिचता जायेगा, त्यो त्यो पेड़ पौधे बढ़ते जायेंगे।

वेद मे इस सिद्धान्त का प्रतिपादन इस प्रकार किया गया है कि—

'प्रमातु प्रतर गुह्यमिच्छम, कुमारो न वीरुध सर्पदुर्वी'। अर्थात माता पृथ्वी की बहुत सी लताओ मे, और उन लताओ के उत्कृष्टतम गुह्यस्थान वृक्ष मे, इच्छा करता हुआ अग्नि बच्चे के समान सरकता है।

पेड़-पौधों के पत्ते हरे क्यों

'पिशन्न रूपि प्रतियुञ्जते कवि,'। (ऋ० ४।७३।२) अर्थात लता तथा पेड़ो के पत्ते दोनो वर्णो (सूर्य का लाल और भूमि का रस कृष्णवर्ण) के मेल से हरे बनते हैं।

वृक्ष लम्बे और पुष्ट किस प्रकार होते है ?

भूमि का रस जब (ऊर्ध्व प्रसरण) ऊपर की ओर खिचता है तो वृक्ष बढ़ते हैं, जब तिर्यक प्रसरण करता है तो पुष्ट होते है। यह एक वनस्पति विज्ञान है। इसका प्रतिपादन प्रमातु प्रतरम गुह्यमिच्छन्' इस पूर्वोक्त मन्त्र के 'प्रतरम' शब्द पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि पृथ्वी का रस जितना ही हृष्ट पुष्ट तथा शक्तिशाली होगा, वृक्ष उतना ही बढ़ेगा।

इस प्रकार वेदों में बड़े अदभुत विज्ञानो का मूल रूप में उल्लेख मिलता है, जिन्हें श्रद्धावान विद्वान जिज्ञासु ही प्राप्त कर सकते हैं। वेद वह अथाह समुद्र है जिसमे ज्ञान विज्ञान के अनेक बहुमूल्य रत्न भरे पड़े हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७०वाँ जन्म दिवस आगामी फाल्गुन बदी दशमी तदनुसार ७ मार्च १९९४ को समस्त आर्य जगत द्वारा समारोह पूर्वक मनाया जावे। सभी आर्य समाजें/आर्य प्रतिनिधि सभायें और शिक्षण संस्थाये स्वामी जी का जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाने की तैयारी अभी से शुरु कर दें।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

अशोक चौहान को एन आर आई सम्मान

नई दिल्ली, २७ दिसम्बर, जर्मनी में बसे भारतीय मूल के उद्योगपति श्री अशोक चौहान को भारत के एन आर आई इन्स्टीट्यूट ने स्वर्ण एन आर आई उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया है। विदेश राज्य मन्त्री श्री रघुनन्दन लाल भाटिया ने आज यहां आयोजित अनिवासी भारतीयो के विश्व सम्मेलन मे यह पुरस्कार प्रदान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल प्रगति की ओर

पिछले माह १५ दिसम्बर १९९३ से १९ दिसम्बर १९९३ तक आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल की ओर से बृहद यज्ञ, नवनिर्मित भवन का उद्घाटन आर्य सम्मेलन, भारतीय भाषा सम्मेलन और महाराणा प्रताप जयन्ती आदि अनेक समारोहों का शानदार आयोजन किया गया। आर्य जगत के तपस्वी पूज्य महात्मा आर्य भिक्षु ने पूर्णाहुति के अवसर पर यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया, जीवन की पवित्रता व प्रगति के लिए यज्ञ सर्वोच्च साधन और जीवन साध्य है। परमात्मा प्राप्ति की वस्तु नहीं है अपितु आत्मा में उसकी प्रतीति का विषय है। आर्य समाज हो इस प्रकार का चरित्र निर्माण करने में हमेशा अग्रसर रहा है। इस लिए मानव मात्र को आर्य समाज के मंच से जुड़ना होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का स्थापना से लेकर आज तक अपना निजी भवन नहीं था। प्रतिनिधि सभा के कर्मठ मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य के अथक प्रयत्नों व धन संग्रह और श्री बटकृष्ण बर्मन के सहयोग से बंगाल सभा का अपना भवन होने का संकल्प उन्होंने पूरा करा दिया है। इन दोनों के ही परिश्रम व लगन से उक्त पांच दिवसीय कार्यक्रम बंगाल में आर्य समाज की उपलब्धियों को ऊंचाई की ओर बढ़ा गया है। लगभग १० लाख रुपये से निर्मित भव्य भवन का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस कार्य क्रम में पं० वन्देमातरम रामचन्द्र राव सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री भूप नारायण शास्त्री, श्री विमल वधावन एडवोकेट (न्याय सभा संयोजक) भी उपस्थित थे। महाराणा प्रताप जयन्ती और भारतीय भाषा सम्मेलनों के मुख्य अतिथि माननीय पं० वन्देमातरम रामचन्द्र राव जी थे।

इस अवसर पर प्रकाशित सुन्दर स्मारिका का भी विमोचन किया गया और बंगाल सभा के प्रधान माननीय बटकृष्ण जी बर्मन का जीवन पर्यन्त आर्य समाज के लिए समर्पित सेवाओं के आदर स्वरूप, अभिनन्दन किया गया।

हैदराबाद, दिल्ली, गोरखपुर, अमेठी सुल्तानपुर मुजफ्फर नगर, हरिद्वार फैजाबाद, पटना, सिलीगुड़ी तथा बंगाल की १५० आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भारी संख्या में पधार कर इस कार्यक्रम को एक यादगार में परिणत कर दिया था, कार्यक्रम को हर प्रकार से सफल बनाने मे बाबू बटकृष्ण बर्मन पं० उमाकान्त उपाध्याय, पं० नचिकेता, श्रीमती सुमन मीना आर्या रामप्यारी आर्या राजेश प्रसाद अरुण आर्य मोहनलाल अग्रवाल सिद्धार्थ गुप्त आदि के प्रशंसनीय योगदान के लिए सभी महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के कर्मठ अधिकारी व सदस्य भविष्य मे भी प्रगति की ओर अग्रसर रह कर बंगाल में आर्य समाज के संगठन को हर प्रकार सबल प्रदान करेंगे।

—दानसिंह मेहरा, दिल्ली

वार्षिकोत्सव

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का ६१वां वार्षिकोत्सव एवं विशाल शान्ती गायत्री महायज्ञ १४ जनवरी से २२ जनवरी ९४ तक म० सुमनायति जी की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक अपने ओजस्वी विचारों से जनता जनार्दन का मार्ग दर्शन करेंगे।

—गोविन्द राम गुरुकुल शिव विहार करावल नगर का वार्षिकोत्सव २४ से २५ जनवरी तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम योगासन आदि के कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनावें।

शोक समाचार

आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी (नैनीताल) के सदस्य श्री ज्ञानचन्द जी की धर्म पत्नी के देहावसान पर आर्य समाज सुल्तानपुर (नैनीताल) की सभा हार्दिक दुःख प्रकट करती है तथा परम पिता परमात्मा से दुखित परिवार के धैर्य एवं दिवंगत आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करती है। —श्रीकृष्ण आर्य

विदेशी षडयन्त्र से हिन्दू समाज को तोड़ा जा रहा है

देवीदास आर्य

कानपुर—विदेशी षडयन्त्र के कारण राजनीति मे जातिवाद को मुख्य मुद्दा बना कर हिन्दू समाज को तोड़ा जा रहा है। इस प्रकार आर्य समाज के एक शताब्दि के समाज सुधार के कार्यों पर पानी फेरा जा रहा है। यह विचार आज आर्य समाज गोविन्द नगर के हाल में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर नगर की समस्त आर्य समाजो की ओर से आयोजित सभा की अध्यक्षता करते केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने प्रकट किए।

यह सभा आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा केन्द्रीय आर्य सभा के तत्वावधान में आयोजित की गई। सभा में वक्ताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि समाज सुधार हिन्दी प्रेम जाति-पाति तोड़क कार्यों पर प्रकाश डाला और गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करने के यशस्वी कार्यों का उल्लेख किया।

श्याम प्रकाश शास्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस २१ ११ ९३ को प्रात ८ ०० से दोपहर १ ३० बजे तक आर्य समाज किदवई नगर के पास मेन मार्किट के मुख्य पार्क में लाला इन्द्र नारायण जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रो० शेरसिंह जी मुख्य अतिथि थे। डा० महेश विद्यालंकार, डा० शिवकुमार शास्त्री, भिक्षु दिवस्य पुत्र भारती मुख्य वक्ता थे।

इस अवसर पर २१ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया था मण्डल के ४० वर्ष पूरे होने के उपलक्ष मे स्मारिका प्रकाशित की गई जिसका विमोचन श्री इन्द्रनारायण जी ने किया। दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के नव निर्मित कार्यालय का उदघाटन प्रो० शेरसिंह जी ने किया। समारोह में दक्षिण दिल्ली की समस्त ५० आर्य समाजो के प्रतिनिधि इस अवसर पर उपस्थित थे। अन्त में ऋषि लंगर मे हजारों व्यक्तियों ने भोजन ग्रहण किया।

रामशरणदास आर्य मन्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/९४ सार्वदेशिक साप्ताहिक १६-१-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) ९३
R N- 625/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D P S O on 13-14-1-1994

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज लाजपत नगर के ३८वें वार्षिकोत्सव तिथि १३ से १९ दिसम्बर १९९३ के अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति श्री वेद प्रकाश श्रोत्रीय के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुई। श्री स्वामी दिव्यानन्द जी के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम के अनन्तर धर्म और राजनीति विषय पर एक विशाल सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री पण्डित रामकिशोर जी शास्त्री ने की। मंच संचालन प्रांतीय आर्य महिला सभा की अध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला आर्या ने किया।

इसी अवसर पर एक स्वागत समारोह के अन्तर्गत नव निर्वाचित विधायक श्री रामभज, श्री बोधराज श्री राजेन्द्र गुप्त, श्री जगदीशलाल बतरा, श्री राजेश शर्मा एवं दिल्ली विधान सभा में विपक्ष के नेता श्री जगप्रवेश चन्द्र को वैदिक साहित्य भेंट करके पुष्पहारों से अभिनन्दित किया गया।

बलदेव कृष्ण विपक्षामी (प्रधान)
आर्य समाज लाजपत नगर

महर्षि दयानन्द नि:शुल्क नेत्र शिविर का आयोजन

महाराजपुर—आर्य समाज महाराजपुर एवं जिला अन्धत्व निवारण समिति छतरपुर की ओर से महाराजपुर स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मे "महर्षि दयानन्द निशुल्क नेत्र शिविर' का आयोजन दिनांक १२-१२ ९३ से २०-१२-९३ तक किया गया। शिविर मे मरीजों को मुफ्त दवायें, चश्में एवं भोजन की व्यवस्था निशुल्क की गयी।

नेत्र शिविर मे आपरेशन शोध एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ डा० एस एस गुप्ता द्वारा दिनांक १३-१२ ९३ को किए गये।

मन्त्री आर्य समाज महाराजपुर

आर्य समाज नौएडा द्वारा श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दिनांक २६ दिसम्बर, आर्य समाज मन्दिर नौएडा मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया। आचार्य भवानीदास जी के ब्रह्मत्व मे यज्ञ सम्पन्न होनेके पश्चात् बहिन गायत्री मीना, श्रीमती मन्जू आर्य, बेटी उर्वशी, बेटी ऋचा द्वारा सुन्दर भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। अखिल भारतीय साहित्य परिषद के महासचिव श्री कान्त एन० एस० वर्मा जी द्वारा प्रस्तुत बड़ी जोशीली कविताओ ने श्रोताओ मे नव जीवन का सचार किया, श्रीकान्त जी ने आर्य समाजी शहीद एवं देश भक्त रामप्रसाद बिस्मिल जी पर किए शोध कार्य का भी वर्णन किया और उन्होंने स्वयं भी आर्यसमाज का सदस्य बन कर आर्य समाज नौएडा की गतिविधियो मे बढ़-चढ़ कर भाग लेने का आश्वासन दिया।

प्रमुख वक्ता डा० प्रेमचन्द श्रीधर जी के ओजस्वी भाषण ने श्रोताओं को बहुत देर तक बांधे रखा।

इस आयोजन से आर्य समाज के प्रचार में बड़ी सहायता मिली और कुछ नए लोग आर्य समाज से जुड़े। श्रीधर जी ने नौएडा आर्य समाज के विशाल प्रांगण मे दिल्ली स्तर का एक आयोजन करने का भी सुझाव दिया।

डा० ए०पी० आर्य
प्रधान आर्य समाज, नौएडा

आर्य वीर दल का उद्घाटन

गत २६ दिसम्बर १९९३ को "स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस" के शुभावसर पर 'आर्य समाज इन्द्रानगर बंगलोर के प्रांगण में "आर्य वीर दल कर्नाटक' की प्रान्तीय शाखा का उद्घाटन प्रमुख समाज सेवी व उद्योगपति माननीय श्री पी० एन० आर्य द्वारा ध्वजारोहण एवं श्री पी० सी० मानव के उद्घाटन भाषण के साथ किया गया। नगर शाखा संचालक एवं प्रशिक्षक श्री शशिकुमार एवं श्री दुर्गसिंह आर्य ने सन्ध्या के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर नगर के सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। "प्रथम आर्य वीर दल" की स्थापना २६ जनवरी १९२९ को हुई थी।

सत्यानन्द आर्य

आर्यसमाज तिमारपुर का वार्षिकोत्सव

नई दिल्ली १० जनवरी उत्तरी दिल्ली की प्रमुख आर्य समाज तिमारपुर का वार्षिकोत्सव २४ जनवरी से डा० सत्यकाम वेदालंकार के ब्रह्मत्व में गायत्री महायज्ञ से प्रारम्भ हो रहा है। राष्ट्र के भावी कर्णधार बच्चों के बहुमुखी विकास के लिए निबन्ध, भाषण वाद विवाद, गायन, चित्रकला, खेलकूद आदिप्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। २८ को आर्य महिला सम्मेलन श्रीमती शकुन्तला आर्या की अध्यक्षता में होगा। ३० जनवरी को पूर्णाहुति के बाद दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ध्वजारोहण एवं राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का उद्घाटन करेगे। सम्मेलन की अध्यक्षता गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल जी करेंगे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, दिल्ली सरकार के विकास व शिक्षामन्त्री श्री साहिब सिंह वर्मा, श्री रामचन्द्र विकल, श्री राजेन्द्र गुप्ता, विधायक, डा० वाचस्पति उपाध्याय, श्री श्रीकृष्ण सिंघल आदि प्रेरक उद्बोधन देंगे। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

—विमल कान्त शर्मा, मन्त्री

एक प्रार्थना

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि के ग्रन्थों का प्रादेशिक एवं विदेशी भाषाओं में अनुवाद का कार्य चल रहा है। इस क्रम में भ्रमोच्छेदन, अनुभ्रमोच्छेदन तथा भ्रान्ति निवारण का अनुवाद प्रगति पर है। ये तीनों पुस्तके उत्तर पक्ष में लिखी गई है अनुवाद करते हुए पूर्व पक्ष को यथावत् समझने के लिए उन मूल लेखो की आवश्यकता है। जो राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्दकृत निवेदन एक और निवेदन दो तथा पंडित महेशचन्द्र न्याय रत्न आदि कृत वेद भाष्य परत्व प्रश्न पुस्तक के नाम से प्रकाशित हुए थे। यदि किसी के पास उपलब्ध हों तो निम्न पते पर प्रेषित करें कार्य के पश्चात पुस्तक धन्यवाद सहित लौटा दी जायेगी। मूल न देना चाहें तो फोटो कापी कर भेज दे इस कार्य में जो व्यय होगा सभा वहन करेगी। —मन्त्री, परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर ३०५००१

शोक समाचार

दिल्ली के प्रमुख आर्य समाजी कार्यकर्ता डा० जगन्नाथ जी का ४-१-९४ को अपराह्न ३ बजे निधन हो गया है, वह आर्य समाज कृष्णा नगर के पूर्व प्रधान थे। दिवंगत के सम्मान में ७-१-९४ को शोक सभा आर्य समाज कृष्णा नगर दिल्ली मे हुयी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा—डा० जगन्नाथ दिल्ली में आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं में से थे। यद्यपि वह पिछले कई वर्षों से सैकड़ों रोग होने के कारण दुखमय जीवन से संघर्ष कर रहे थे, परन्तु आर्य समाज के सेवा के लिए वह तन, मन, धन से जीवन भर समर्पित रहे। उनके निधन से दिल्ली मे आर्य समाज सगठन को भारी क्षति पहुंची है। स्वामी जी ने अपने शोक संदेश मे दिवंगत आत्मा की सद्गति की कामना करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की।

— अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि सार्वदेशिक न्याय सभा के सदस्य माननीय जस्टिस पी० पी० नवन की माता श्रीमती भगवन्ती नवन का १८-१२-९३ को दिल्ली मे निधन हो गया है। ३०-१२-९३ को शान्ति यज्ञ में न्याय सभा के संयोजक विमल वधावन एडवोकेट ने दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, न्याय सभा के प्रधान जस्टिस महावीर सिंह और संपूर्ण आर्य जगत की ओर से शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।